Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 43 अंक-07
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 15 मई से 21 मई 2019 तक
बैशाख शुक्ल एकादशी से ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

स्वागत योग्य है बुर्के... पृष्ठ- 3

वरदान है लहसुन... पृष्ठ- 4

ईश्वर और आधुनिक... पृष्ठ- 5

परिशिष्ट नाथूराम का... पृष्ठ- 8

आंतकी अजहर... पृष्ठ- 12

- कश्मीर में फैला जिहादी इस्लामीक संगठनों का मकड़जाल
- स्वाधीनता संग्राम और आर्यसमाज
- भारतीय वैदिक साहित्य में विज्ञान दर्शन
- सरकारों के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है नक्सलवाद

सीताराम येचुरी के बयान पर हिन्दू महासभा ने जताई कड़ी नाराजगी

• संवाददाता •

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) के नेता सीताराम येचुरी पर हरिद्वार में उनके बयान को लेकर मुकदमा दर्ज कराया गया है वहीं येचुरी के बयान पर अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कड़ी आपत्ति दर्ज कराते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। येचुरी ने रामायण और महाभारत पर विवादित बयान दिया था। यह एफआईआर बाबा रामदेव सहित कई संतों द्वारा दी गई शिकायत के आधार शेष पृष्ठ 10 पर

अक्षय कुमार को राष्ट्रीय पुरस्कार देना जायज नहीं : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

मशहूर बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार अपनी दोहरी नागरिकता के चलते मतदान न करने को लेकर विवाद में घिर गए है। उनकी कैनेडियन नागरिकता को लेकर मचे बवाल की आग अभी ठंडी भी नहीं पड़ी थी कि अब उन्हें मिले राष्ट्रीय पुरस्कार पर बहस शुरू हो गई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने अक्षय को मिले राष्ट्रीय पुरस्कार पर आपत्ति जताई है और यह सवाल तक उठाया है कि जब अक्षय भारत के नागरिक ही नहीं हैं तो फिर वह राष्ट्रीय पुरस्कार के हकदार कैसे हैं? हिन्दू महासभा का मानना है कि वाकई यह एक बहुत ही अहम सवाल है। क्या कनाडाई नागरिक भारत के नेशनल अवॉर्ड के योग्य हैं? साल–२०१६ में अक्षय कुमार को श्रेष्ठ अभिनेता का नेशनल अवॉर्ड मिला, मान लीजिए कि अगर ज्यूरी या मंत्रालय ने इस मामले में कोई गलती की है तो क्या इसमें सुधार कर दिया जाएगा? बता दें कि अक्षय कुमार उस वक्त लोगों के निशाने पर आए जब देश में जारी लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में २९ अप्रैल को मुंबई में हुई वोटिंग के दौरान अभिनेता अक्षय कुमार ने न तो वोट डाला और न ही किसी पोलिंग बूथ पर ही नजर आए। हालांकि उनकी पत्नी ट्विंकल ने वोट डाला और कई अन्य सिलेब्रिटीज ने भी वोट डालने के बाद अपनी सेल्फी पोस्ट कीं। इसके बाद लोगों ने अक्षय को आड़े हाथों ले लिया। अक्षय ने इस पर सफाई देते हुए कहा भी कि उनके पास भारत की नहीं बल्कि कनाडा की नागरिकता है इसलिए वह वोट शेष पृष्ठ 10 पर

वीर–पूजा

हिन्दू जाति यदि अपने पुरुखों को किसी धर्म–संग्राम में आत्मोत्सर्ग करते हुए देखकर प्रसन्न न हो तो सिवाय इसके और क्या कहा जा सकता है कि हममें वीर–पूजा की भावना भी नहीं रही, जो किसी जाति के अधःपतन का अन्तिम लक्षण है। जब तक हम अर्जुन, प्रताप, शिवाजी आदि वीरों की पूजा और उनकी कीर्ति पर गर्व करते हैं.तब तक हमारे पुनरुद्धार की कुछ आशा हो सकती है। जिस दिन हम इतने जातिगौरव–शून्य हो जाएँगे कि अपने पूर्वजों की अमरकीर्ति पर आपत्ति करने लगें, उस दिन हमारे लिए कोई आशा न रहेगी।

हम तो उस चित्तवृत्ति की कल्पना करने में भी असमर्थ हैं जो हमारे अतीत गौरव की ओर इतनी उदासीन हो। हमारा तो अनुमान है कि हिन्दू इच्छा न रहने पर भी इस बात से प्रसन्न होंगे और उस पर गर्व करेंगे। हाँ मुसलमानों की तुष्टि के विषय में हम निश्चयात्मक रूप से कुछ नहीं कह सकते।

लेकिन चूंकि मुसलमान लेखकों ने यह अन्वेषण किया है। और उन्हीं के आधार पर हमने हिन्दू पात्रों का समावेश किया है इसलिए इस विषय में शंका करने के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता कि मुसलमान तुष्ट होंगे।

यदि मुसलमानों को एक महान संकट में आर्यों से सहायता पाने पर खेद होता तो वह इसका उल्लेख ही क्यों करते। आजकल की समुन्नत जातियाँ भी संकट के अवसर पर दी गई सहायता का एहसान मानने में अपमान नहीं समझतीं। फिर... कोई कारण नहीं कि मुसलमान क्यों आर्यों की प्राणपण से दी गई सहायता का अनादर करें।

हाँ, यदि हिन्दू लोग आज उस एहसान के बल पर मुसलमानों के सामने शेखी बघारने लगें तो सम्भव है मुसलमानों के मन में कृतज्ञता की जगह द्वेष का भाव उत्पन्न हो जाए और वे उस घटना को भूल जाने की चेष्टा करने लगें।

समालोचक महोदय को दूसरी शंका यह हुई है कि यदि आर्यों का अरब में आकर बसना मान लिया जाए तो यह क्यों कर हो सकता है कि महाभारत काल से हुसैन के समय तक वे लोग अपने धार्मिक आचार–विचार की रक्षा कर सके, कैसे मंदिर बनवा सके, कैसे सियासत बना सके? अतएव उनकी वेश–भूषा तथा भाषा भी अरबों से ही मिलनी चाहिए थी। अरब जैसे मूर्ति विध्वंसक जाति के बीच में रहकर वे कैसे अपनी जातीयता का पालन कर सके?

हमारे मित्र को मालूम होगा कि महाभारत काल में अरब या ईरान आर्यों के लिए कोई अपरिचित स्थान न थे। परस्पर गमनागमन होता रहता था। उस समय मुसलमान मजहब का जन्म न हुआ था और अरब जाति मूर्तिपूजा में रत थी। एक नहीं, अनेक देवताओं की पूजा होती थी।

बहुत संभव है उनकी भेष–भूषा भी आर्यों से मिलती–जुलती रही हो। सिदियन, हूण, कुषाण आदि जातियाँ उत्तर–पश्चिम से आकर आर्यों में सम्मिलित हो गईं। इससे प्रकट होता है कि उस समय उनमें और आर्यों में विशेष सादृश्य था। कम से कम यह अनुमान किया जा सकता है कि महाभारत काल में प्रतिमा–पूजा का प्रसार न हुआ था और इसका कोई प्रमाण नहीं कि आर्यो और अरबों में उतनी भिन्नता न थी जितनी इस समय है।

हुसैन के समय तक मुसलमान मजहबों का प्रादुर्भाव हुए ५० वर्ष से अधिक न हुए थे। उस वक्त तक ईरान भी पूर्ण रीति से मुसलमान सेनाओं के सामने परास्त न हुआ था। जब हम जानते हैं कि अश्वत्थामा के अरब निवासी वंशज मूर्तिपूजक थे तो मुसलमानों को उनसे खामख्वाह लड़ने का क्या कारण हो सकता था?

ऐसी दशा में यदि वे आर्य अपने आचरण का पालन न कर सके तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। उनका नामकरण हमने नहीं किया। हमने उनके वही नाम लिख दिए हैं, जो हमें इतिहास में मिले।

यह इस बात की एक और दलील है कि इतना जमाना गुजरने पर भी वे आर्य वीर अपनी वंशज परम्परा को भूले न थे। जब हम देखते हैं कि पारसी जाति शताब्दियों से भारतवर्ष में रहने पर भी अपने मत और आचरण को निभाती चली जाती है तो आर्यों के विषय में ऐसी शंका करना सर्वथा निर्मूल है।

मुंशी प्रेमचंद

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों को इस समय सन्तान का मोह आपको मुसीबत में डाल सकता है, अतः सावधानी बरतें। घरेलू कार्यो की जिम्मेदारियों का भार आपको ही उठाना पड़ेगा। घर–घोड़ी पैदल चले, बीन चलायें तीर साधनों का उपयोग करने से कार्यो में गति आयेगी।

वृष : इस सप्ताह आप रचनात्मक कार्यो के प्रति उत्साहित रहेंगे परन्तु ध्यान रखें कि अपने मूल स्वभाव में बदलाव न करें क्योंकि वही आपकी पहचान है। ऑफिस के कार्यो के प्रति मन उदासीन हो सकता है परन्तु ऐसा करना आपकी प्रगति में बाधक हो सकता है।

मिथुन : हर कार्य में कमी निकालने की आदत से लोग आपसे दूरी बनाने लगेंगे, जो आपके लिए हितकर नहीं है। समाज और समय के अनुरूप बदलना अपरिहार्य है। कुछ रचनात्मक कार्यो को लेकर आप उलझ सकते है। दूर–दराज लोगों से भेंट हो सकती है।

कर्क : इस सप्ताह आपको कुछ कार्यक्रमों में शिरकत करनी पड़ सकती है जिससे आपके नयें सम्बन्ध बनेंगे। कुछ लोग पारिवारिक समस्याओं को लेकर चिन्तित रहेंगे परन्तु उनके प्रति चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि उनका समाधान समय करेगा।

सिंह : इस वक्त कुछ लोगों को आर्थिक समस्यायें घेरे रहेंगी परन्तु दिमागी रूप से आप कमजोर न हों। कैरियर की दिशा में प्रगति होते–होते रूक जाती है। गैर सरकारी संगठनों से जुड़े लोग अपने कार्यो में पूरी ईमानदारी व मेहनत से लगे रहें। जीवन साथी के स्वास्थ्य पर धन का व्यय अधिक हो सकता है।

कन्या : इस सप्ताह आप–अपने कार्यो के प्रति सावधान रहें अन्यथा सावधानी हटी और दुर्घटना घटी वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। देर आये दुरस्त आयें, परन्तु आये तो"। यदि केई सुधर रहा है तो, उसे सुधरने का पूरा मौका जरूर दें।

तुला : आप–अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करेंगे तो, सफलता के भय से आप चिन्तित नहीं रहेंगे। इसलिए पहले अपने–आपको पहचाने उसके बाद ही कोई निर्णय लें। धन, पद, प्रतिष्ठा सबकुछ मिलेगा परन्तु अभी इन्तेजार करना पड़ेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह आप कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि समाज आपको नजरअंदाज कर दें। कुछ लोगों की आवश्यकतायें पूरी होगी जिससे उनके मन में आशावादी विचार उत्पन्न होंगे। कुछ सम्बन्धों को लेकर मन परेशान हो सकता है।

धनु : इस सप्ताह सोंच–समझकर लिए निर्णयों में सफलता प्राप्त हो सकती है। किसी के प्रति वैमनस्य पूर्ण स्वभाव रखने से आपको ही हानि हो सकती है। नवयुवक अपने कार्यो को लेकर असमंजस की स्थिति में रहेंगे।

मकर : समय के साथ चलने की आदत डाल लें अन्यथा जॅहा है, वही रहेंगे। परिवर्तन की हवा बह रही है, अतः आप सचेत व सकारात्मक रहें। मित्रों के साथ मनोरंजन के अवसर उपलब्ध होंगे। घरेलू खर्चो में बढ़ोत्तरी होने के आसार है।

कुम्भ : संघर्ष और सफलता एक दूसरे के पूरक है, अतः आप हर समस्या का डटकर मुकाबला करें। कुछ लोग अपने जीवन साथी से तनाव के कारण परेशान हो सकते है। भौतिक सुविधा वाली वस्तुओं की खरीदारी कर सकते है।

मीन : आमदनी की अपेक्षा व्यय अधिक हो सकता है, जिसके फॅलस्वरूप आपका घरेलू बजट गड़बड़ा सकता है। गरीबों की गरीबी देखकर आपका मन उद्वेलित हो सकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाने की जरूरत है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

कबित बिबेक एक नहिं मोरें।
सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें।।

इनमें से काव्यसम्बन्धी एक भी बात का ज्ञान मुझ में नहीं है, यह मैं कोरे कागजपर लिखकर (शपथपूर्वक) सत्य –सत्य कहता हूँ।।६।।

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक।।६।।

मेरी रचना सब गुणों से रहित है; इसमें बस, जगतप्रसिद्ध एक गुण है। दसे विचारकर अच्छी बुद्धिवाले पुरुष, जिनके निर्मल ज्ञान है, इसको सुनेंगे।।६।।

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।।
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी।।

इसमें श्रीरघुनाथजी का उदार नाम है, जो अत्यन्त पवित्र है, वेद –पुराणों का सार है, कल्याण का भवन है और अमगंलों को हरने वाला है, जिसे पार्वतीजी सहित भगवान् शिवजी सदा जपा करते हैं।।१।।

3

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 15 मई से 21 मई 2019 तक

अध्यक्षीय

सरकारों के लिए बड़ी चुनौती बनता नक्सलवाद

देश में नक्सली हिंसा से कई दशक तक जूझने के बाद भी सरकारें नक्सल नीति की दिशा तय करने की चुनौतियों से जूझ रही हैं। यह अभी भी साफ नहीं हो पाया है कि नक्सलवाद की समस्या का समाधान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रयासों में है या फिर कानून और व्यवस्था से जुड़ा मामला है। नक्सलवाद के अंतर्गत आने वाले लाल गलियारे की हिंसा पिछले पांच दशकों से जारी है। देश के २१ राज्यों के लगभग ढाई सौ जिलों को प्रभावित करने वाला नक्सलियों का यह इलाका आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। इन इलाकों में अपहरण, फिरौती, डकैती, बम विस्फोट, निर्ममता से हत्याएं, अवैध वसूली और विकास को बाधित करने की कोशिशें, लोकतांत्रिक सत्ता को उखाड़ फेंकने की इच्छा और समांतर सरकार चलाने की हिमाकतें होती रही हैं। देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती बने नक्सलियों को केंद्र और राज्य सरकारें अक्सर चुका हुआ ही घोषित करने की गलती करते रही हैं और हमेशा इसका जवाब बेहद कायराना मिलता रहा है। २५ मई २०१३ को जीरम घाटी में हुए नक्सली हमले ने पूरे देश को हिला कर रख दिया था। आजाद भारत के इतिहास में नेताओं को निशाना बनाने का यह सबसे वहशियाना कृत्य था। नेताओं को नक्सलियों ने जिस बेरहमी से मारा उससे लोकतंत्र के प्रति उनकी नफरत का पता चलता है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

इसके पहले छतीसगढ़ के दंतेवाड़ा में सबसे बड़ा हमला ६ अप्रैल २०१० को हुआ था, जिसमें ७६ जवान शहीद हो गए थे। बड़ी संख्या में नक्सलियों ने जवानों को चारों ओर से घेर कर उन पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसाई थीं। साल २००६ में कोलकाता से ढाई सौ किलोमीटर दूर लालगढ़ पर नक्सलियों के कब्जे का घटनाक्रम भी हैरान कर देने वाला था। माओवादियों ने इस इलाके को कब्जे में लेकर स्वतंत्र घोषित कर दिया था, जिसके बाद कई महीनों तक संघर्ष चला और आखिरकार सुरक्षा बल इस विद्रोह को दबाने में कामयाब रहे थे। दरअसल, सामाजिक न्याय की स्थापना के नाम पर अस्तित्व में आई नक्सल विचारधारा हिंसा, रक्तपात और वैधानिक सत्ता के खिलाफ काम करने वाला ऐसा संगठन बन गया है जिसमें खूनी विद्रोह को स्वीकार कर लिया गया है। भारत, नेपाल और बांग्लादेश की सीमा पर स्थित नक्सलबाड़ी में भूस्वामियों के खिलाफ संथालों ने तीर कमान लेकर जिस असमानता के खिलाफ हिंसक रुख अपनाया था, उसका बड़ा और हिंसक रूप देश के कई भागों में लगातार देखने को मिलता है। १९६७ में ही ऑल इंडिया कमेटी ऑफ कम्युनिस्ट रिवोल्यूशनरी का गठन किया गया था, जिसमें पश्चिम बंगाल, ओडिशा आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, केरल और जम्मू–कश्मीर के नेता शामिल हुए थे और उन्होंने संगठन को मजबूत करने, सशस्त्र संघर्ष चलाने और गैर संसदीय मार्ग अपनाने का निर्णय लिया गया। इससे साफ था कि वंचितों, गरीबों और शोषितों के हितों के नाम पर स्थापित संगठन ने लोकतंत्र की वैधानिक व्यवस्था को चुनौती देते हुए हिंसक रास्ता चुना। नक्सलवाद की हिंसक विचारधारा को राजनीतिक कारणों से स्थानीय समर्थन मिलने से समस्या भी बढ़ती गई। नक्सलियों ने पुलिस और अर्धसैनिक बलों को निशाना बना कर नब्बे के दशक में इसे देश की बड़ी आंतरिक चुनौती बना दिया। इस समय देश के साठ फीसद राज्य नक्सलवाद से प्रभावित हैं। इन राज्यों में कहीं नक्सली हमलों की तीव्रता ज्यादा है तो कहीं पर कम। नक्सलियों के लिए पिछड़े इलाके मुफीद माने जाते हैं, इसलिए सरकार को पिछड़े क्षेत्रें में विकास और आदिवासियों के बीच विश्वास बहाली के उपाय करने की जरूरत है। साथ ही प्रभावित इलाकों में उचित आबंटन, सेना का आधुनिकीकरण और हथियार डालने वालों का पुनर्वास जैसी नीतियों पर लगातार काम कर नए नक्सलियों की नई पौध को रोका जा सकता है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

स्वागत योग्य है बुर्के पर प्रतिबंध

केरल के एक शिक्षण संस्थान का छात्राओं के नकाब पहनने से रोक के फैसले ने बुर्का पर रोक लगाने की बहस को एक नया आयाम दिया है। केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक में करीब १०० स्कूल, डिग्री और पेशेवर कॉलेज चलाने वाली संस्था मुस्लिम एजुकेशन सोसाइटी (एमईएस) ने दिसंबर २०१८ में केरल हाई कोर्ट के उस फैसले को बरकरार रखा है, जिसमें व्यक्तिगत अधिकारों से शैक्षणिक संस्थान के अधिकारों को कानूनी तौर पर ऊपर माना गया था। उनका कहना है कि इसका श्रीलंका के मुद्दे से कोई लेना–देना नहीं है। हमने अपने सभी संस्थानों को १७ अप्रैल को ही सर्कुलर जारी कर दिया था। हम नकाब पहनने के खिलाफ हैं। लेकिन केरल के मुस्लिम संगठन समस्त केरल जमीयत–उल–उलेमा ने एमईएस के इस रुख का विरोध किया है। एमईएस के इस फैसले ने श्रीलंका में ईस्टर संडे के दिन सीरियल धमाकों के बाद बुर्का पहनने पर प्रतिबंध लगाने के मामले में बहस को एक नया आयाम दिया है। केरल हाई कोर्ट में क्राइस्ट नगर सीनियर सेकेंडरी स्कूल की दो नाबालिग छात्राओं फातिमा तसनीम और हफजा परवीन की तरफ से एक याचिका दायर की गई थी। उनकी शिकायत थी कि उन्हें स्कूल में हिजाब और फुल स्लीव शर्ट नहीं पहनने को कहा गया था। याचिका में ये भी कहा गया कि स्कूल ने उनकी गुजारिश को अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह ड्रेस कोड के खिलाफ था। इस पर जस्टिस ए मुहम्मद मुश्ताक ने अपने फैसले में कहा कि छात्रों का अपनी इच्छानुसार कपड़े पहनने का निर्णय उनका उतना ही मौलिक अधिकार है, जितना कि स्कूल का यह अधिकार कि वो यह सुनिश्चित करे कि सभी छात्र एक तरह के ड्रेस ही पहनें, जो स्कूल ने चुनी हो। इस मामले में, कोर्ट ने महसूस किया कि सबसे बड़ा हित कई सरोकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं और कम महत्वपूर्ण हित केवल व्यक्तिगत हित का प्रतीक हैं। यदि बड़े स्तर के हितों की अनदेखी की जाएगी तो कम महत्व के मुद्दे हावी हो जाते हैं जिससे अव्यवस्था उत्पन्न होती है। फैसले में कहा गया, इस मामले में सबसे बड़ा हित संस्था के प्रबंधन का है। यदि प्रबंधन संस्था को उसके संचालन के लिए खुली छूट नहीं दी गई तो यह उसके मौलिक अधिकारों को नष्ट करना होगा। संवैधानिक अधिकारों का उद्देश्य दूसरे के अधिकारों का हनन करके किसी एक के अधिकार की रक्षा करना नहीं है। वास्तव में, संविधान सर्वसम्मति और प्रमुखता से बड़े स्तर पर होने वाले लोगों के हितों का समावेश करता है। हालांकि, जब बात प्राथमिकता देने की हो तो, व्यक्तिगत हित की तुलना में बड़े स्तर पर हितों के लाभ को तरजीह देनी चाहिए। अधिकारों का टकराव का समाधान व्यक्तिगत अधिकारों की अवहेलना करके नहीं बल्कि संस्था और छात्राओं के बीच इस तरह के संबंध को बनाए रखने के बड़े अधिकार के बरकरार रखते हुए हल किया जा सकता है। इस बाबत उक्त कालेज के प्रवक्ता का कहना है कि हिजाब एक कपड़े के अलावा और कुछ नहीं है। यह फैशन बन गया है। बुर्का बाहरी संस्कृति है। यह चार–पांच साल पहले मौजूद नहीं था। खाड़ी से लौटे लोग इसे वहां से ला रहे हैं। वो मानते हैं कि मौलवियों को इस पर चिंता नहीं करनी चाहिए। महिलाओं को अपना चेहरा क्यों ढंकना चाहिए। उनकी अपनी पहचान है। यह एक आदिम रीति है। मौलवियों का अपने समुदाय पर वैसा नियंत्रण नहीं है जैसा ईसाई धर्म के पादरियों का अपने समुदाय पर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पादरी शैक्षणिक संस्थान चलाते हैं। मौलवियों के पास बहुत से संस्थान नहीं हैं। हमारा मौलवियों से कोई लेना–देना नहीं है। हैदराबाद में एनएएलएसएआर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ में उप–कुलपति प्रोफेसर फैजान मुस्तफा ने कहा कि सैद्धांतिक रूप से उलेमाओं से कोई एकमत नहीं है। इस पर एक विचार नहीं है। वो कहते हैं, यह मेरा निजी विचार है कि बुर्का अपनी पसंद का विषय है। यदि कोई इसे पहनना चाहता है तो उन्हें इसकी अनुमति दी जानी चाहिए। लेकिन आप अपने फैसले किसी पर थोप नहीं सकते। जब किसी चीज पर आपत्ति जताई जाती है तो आप पाएंगे कि लोग ऐसा करने लगते हैं। और मुस्लिम समुदाय रूढ़िवादी उलेमाओं से प्रभावित है तो, शिक्षित महिलाओं के लिए, यह उनकी पसंद का विषय है। दूसरी तरफ, जो उतनी शिक्षित नहीं हैं वो इसे छोड़ रही हैं।लेकिन, आप संवैधानिक रूप से इसे चुनौती नहीं दे सकते क्योंकि सवाल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का है। श्रीलंका में बुर्के पर प्रतिबंध लगाने का कारण वहां हुआ दर्दनाक चरमपंथी हमला है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गैस कारण और निवारण

✍ अभय कुमार जैन

आधुनिक औद्योगिक युग में हमारा रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार सभी में भारी बदलाव आया है। आम आदमी किसी न किसी व्याधि से त्रस्त व ग्रस्त है। गैस बनना एक आम शिकायत है। गैस बनने के कई कारण हैं–जैसे समय पर भोजन नहीं करना, अधिक भोजन करना, शारीरिक परिश्रम का अभाव, टहलना व व्यायाम नहीं करना, चाय, कॉफी, माँस मदिरा, धूम्रपान, नमकीन, मसालेदार चाट–पकौड़े का सेवन, चना, काबुली चना, बंदगोभी, शलजम, मूली, प्याज, सेम, खीरा और फलों में सेब, आलूबुखारा भी गैस का निर्माण करते हैं। दिन में सोना, क्रोध, ईर्ष्या, चिड़चिड़ापन, आधुनिक समय का पहनावा, तंग कपड़े इत्यादि कारण भी गैस की तकलीफ बढ़ाने में योगदान देते हैं।

अपोलो बी.एस.आर. अस्पताल की डायटीशियन रेखा चन्द्राकर के अनुसार–जब आँतों में डाइजेशन ठीक रखने वाले तत्वों का सीक्रियेशन कम होता है, तो गैस बनने लगती है। यह प्रॉब्लम ज्यादा देर तक बैठकर काम करने या कब्जियत होने पर और बढ़ जाती है, इसके अलावा स्पाइशी फूड खाने, खाने को अच्छी तरह से नहीं चबाने या पेट में इंफेक्शन से भी गैस बनने लगती है। लगातार गैस होने पर भूख कम हो जाती है, हार्ट पेन रहता है, साँस लेने में परेशानी, पेट फूलने लगता है, थकान महसूस होती है, सिर व.सीने में दर्द, बेचैनी लगने लगती है। भोज्य पदार्थों में पाए जाने वाले न्यूट्रिएंट्स जैसे सुक्रोज, रेफिनोज से गैस की प्रॉब्लम बढ़ती है। निम्न वस्तुओं के प्रयोग से भी गैस बनती है।

आलू : इसमें स्टार्च की मात्रा अधिक होती है, ज्यादा आलू खाने से गैस बनती है। **दूध** : इसमें मौजूद लेक्टोस को डायजेस्ट होने में ज्यादा समय लगता है, इससे गैस की प्रॉब्लम बढ़ती है। **बींस** : इसमें काम्लेक्स शुगर रेफिनोज होती है, इसे डाइजेस्ट होने में ज्यादा समय लगता है और गैस बनती है। **गोभी** : फूलगोभी और पत्ता गोभी में रेफिनोज की मात्रा अधिक होती है, इसे खाने से गैस ज्यादा बनती है। **सेब** :

इसमें मौजूद सोबिटाल बॉडी में आसानी से डाइजेस्ट नहीं होते हैं, इससे गैस प्रॉब्लम बनती है। **प्याज** : इसमें फ्रुक्टोज की मात्रा ज्यादा होती है, इससे गैस बार–बार बनती है। **ब्रेड** : इसमें लैक्टोज शुगर होती है, जिसे पचाने में समय लगता है और गैस बनती है।

गैस से छुटकारा पाने के उपाय : भूख लगने पर ही खूब चबा–चबाकर भोजन करें, भरपेट भोजन नहीं करें। अधिक मात्रा में भोजन करने के बजाय थोड़ा–थोड़ा खाएँ। तत्काल आराम के लिए दो लहसुन की कलियाँ छीलकर, बीज निकाली हुई मुनक्का में लपेटकर, भोजन करने के बाद से, थोड़े ही समय में पेट में रूकी हुई गैस निकल जाएगी। लहसुन के सेवन से पेट में गैस नहीं बनती। ठण्डी–बासी चीजें नहीं खाएँ। आलू, चावल व मैदायुक्त पदार्थों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें।

रेशेदार फलों का ज्यादा प्रयोग करें। पंचामृत व पंचगव्य आदि में उत्तम औषधि के गुण हैं। टमाटर का सेवन गैस की शिकायत दूर कर, पाचन शक्ति को बढ़ाता है, अतः भोजन के साथ सलाद के रूप में इसका सेवन किया जाना चाहिए। टमाटर के साथ काला नमक व काली मिर्च का उपयोग तो बहुत ही अच्छा रहता है। जिन लोगों को प्रायः गैस की शिकायत रहती हो, उन्हें मिश्री के साथ पुदीने की कुछ पत्तियाँ चबाकर खानी चाहिए। वायु विकार की शिकायत होने पर हरड़ का चूर्ण, शहद के साथ लें अथवा भोजन के पश्चात् एक हरड़ चूसें, इससे पेट ठीक रहेगा। दाल या सब्जी में कुछ दिनों तक सौंफ का छोंक लगाकर, उपयोग में लें। मैथी की सब्जी तथा मैथी के दाने गैस में बहुत राहत प्रदान करते हैं, कढ़ी के छौंक में मैथी दाना डालें दें। सुबह–शाम पैदल घूमना चाहिए, पानी खूब पीना चाहिए, भोजन के बाद तुरंत लेटना या सोना हानिकारक है। गैस निवारक वस्तुएँ जैसे लौंग, सौंठ, पुदीना, हींग, जीरा, अजवायन, काला नमक आदि पदार्थों का सेवन अच्छा रहता है, परंतु इनकी आदत न बनाएँ। भोजन के बाद दही या छाछ में चुटकी भर अजवायन का चूर्ण व काला नमक डालकर सेवन करें। इससे गैस मिटती है, अफारा व कब्ज भी दूर हो जाती है। प्राकृतिक उपचार के क्रम से सुबह १५/२० मिनट पेट पर मिट्टी–पट्टी रखें, ठण्डे पानी में भीगा हुआ कपड़ा भी रखा जा सकता है। रोज सुबह उठकर ३–४ गिलास पानी पीएँ, जल पीकर वमन करना। यदि चाय पीने की आदत है, तो नींबू की चाय पीएँ, नीम का दातुन करें, कच्चे पेठे का रस १–२ गिलास रोज पीएँ। आँवला रस मिश्री डालकर पीएँ, नारियल पानी पीएँ। कच्चा नारियल खाएँ। आँवला का मुरब्बा दूध के साथ लें। उबली हुई सब्जियाँ कम नमक, कम मसाले डालकर खाएँ, नींबू पानी पीएँ। पेट पर गीली पट्टी रखें, रात को समय पर सोएँ, तनाव रहित रहें, क्रोध नहीं करें।

क्या खाएँ–ठण्डा दूध, केला, पपीता, चीकू, अमरूद, आँवला, हरड़, लौंग, घीया, परवल, करेला, तोरई, पेठा, बथुआ, खीरा, ककड़ी, मूंग, सिंघाड़ा, मसूर, पुराना चावल, जौ, सतू, साबूदाना आदि।

वरदान है लहसुन

✍ अनिल कुमार

लहसुन का वानस्पतिक नाम 'एलियम सटायवम' है। इसे अंग्रेजी में गारलिक कहते हैं। उत्कृष्ट एवं स्वादिष्ट मसाला होने के साथ–साथ लहसुन में प्रचुर मात्रा में औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। अनेक छोटी–बड़ी बीमारियों का सफल व अचूक इलाज करने की क्षमता रखने के कारण लहसुन को 'घरेलू वैद्य' की संज्ञा दी गई है। लहसुन में रसायनिक तत्वों का भण्डार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा ६३ प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट की मात्रा २६ प्रतिशत, वसा ०.१, चूना ०.०३ तथा खनिज लवण व लोहे की मात्रा प्रति १०० ग्राम में १.३ प्रतिशत होती है। इसके अलावा इसमें विटामिन ए, बी, सी एवं सल्फ्यूरिक एसिड भी प्रचुर मात्रा में होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार पेट दर्द, कब्ज, पेट के कीड़े, पेट फूलना, गले की सूजन, गले का दर्द, खाँसी, जुकाम, श्वास की परेशानी, सिरदर्द, टी.बी., डिप्थीरिया, चर्मरोग तथा हड्डी की बीमारी में प्रतिदिन कच्चे लहसुन की कलियाँ चबाकर या उसका रस सेवन करके स्वयं को पूर्ण स्वस्थ रख सकता है।

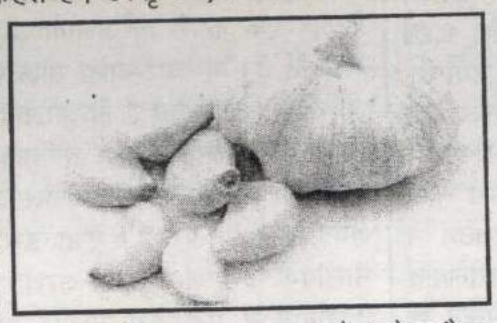

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार तेज एंटीबायोटिक एवं एलोपैथिक दवाएँ हमारे शरीर में मौजूद आवश्यक एवं कीटाणु तथा प्रतिरोधी को भी नष्ट कर देती हैं। फलस्वरूप, शरीर में 'इस्ट' की मात्रा बढ़ने लगती है और हम विभिन्न प्रकार की एलर्जी के शिकार हो जाते हैं, लेकिन लहसुन का उपयोग करने से शरीर में किसी प्रकार का विकार पैदा नहीं होता।

इतने अधिक औषधीय गुणों से युक्त होने पर भी लोगों द्वारा इसका उपयोग मुख्यतः मसाले के रूप में ही किया जाता है।

लहसुन के औषधीय गुण : लहसुन की कलियों को पीसकर दूध या पानी में मिलाकर पीने से पेट के कृमि नष्ट हो जाते हैं तथा मल के रास्ते बाहर निकल जाते हैं। लहसुन को तिल के तेल में गर्म कर, ठण्डा करके कान में ३–४ बूँद सुबह–शाम डालने से कान का बहना व दर्द ठीक हो जाता है। त्वचा के धब्बों पर लहसुन का लेप करने से धब्बे दूर हो जाते हैं। लहसुन की १–२ गांठें पीसकर बालों में लगाने से रूसी गायब हो जाती है, एक तोला लहसुन के रस को दोगुना गुनगुने पानी में मिलाकर नियमित रूप से सेवन करने से दमा का रोग ठीक हो जाता है। किसी भी प्रकार के घाव अथवा जख्म को लहसुन के रस मिले पानी से धोकर, उसके ऊपर लहसुन का पिसा हुआ लेप लगाकर पट्टी बाँध देने से घाव या जख्म शीघ्र भर जाता है।

टी.बी. रोग से पीड़ित व्यक्ति को प्रातःकाल कुल्ला करने के बाद लहसुन की २–३ कलियाँ अच्छी तरह चबाकर शीतल जल के साथ खाने से कुछ ही दिनों में अपेक्षित शेष पृष्ठ 11 पर

ईश्वर और आधुनिक समाज

✍ प्रो. शामलाल कौशल

कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने अपने परम सखा, अर्जुन को गीता में कहा है कि यदा यदा हि धर्मस्य ग्लार्नि भवति भारत... हे अर्जुन जब–जब भी धर्म की ग्लानि होती है, पाप, अनाचार, दुराचार, अत्याचार बढ़ जाता है। मैं तब–तब दुष्टों का संहार करने के लिए, धर्म की स्थापना के लिए अवतार लेता हूँ। और यह सब बात बिलकुल सत्य है। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जब ईश्वर ने इस धरती को पापियों, आततायियों, इंसानियत की हत्या करने वालों, साधु संतों, मासूम बच्चों, लाचार महिलाओं, आम जनता पर जुल्म करने वालों से मुक्त कराने के लिए अवतार लिए हैं। श्री रामचन्द्र जी ने अवतार लेकर रावण तथा और बहुत सारे राक्षसों का संहार कर इस धरती का बोझ घटाया। श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर जहाँ अपनी मधुर बांसुरी बजाकर गोप–गोपियों संग रासलीलाएँ रचाई वहाँ उस समय के राक्षस प्रवृत्ति के अपने ही मामा कंस तथा अन्य राक्षसों को यमलोक पहुँचाया। महाभारत के महासंग्राम में उन्होंने कौरवों तथा पांडवों में शांति दूत बनकर बेशक युद्ध टालने की कोशिश की लेकिन अन्ततः युद्ध होने

की स्थिति में अधर्म के खिलाफ धर्म का साथ देते हुए अपने मित्र अर्जुन तथा पांडव पुत्रों का कौरवों के खिलाफ साथ दिया। इस महाभारत के युद्ध में शायद ही कोई परिवार रहा होगा जिसका कोई–न–कोई मरा न होगा आदि–आदि।

लेकिन आज उस बात की जरूरत महसूस होने लगी है कि परमात्मा एक बार फिर अवतार ले। आज धर्म की हानि हो रही है। जगह–जगह धर्म के नाम पर साधु, संत, महंत, बाबे, तथाकथित गुरु, अपने आपको भगवान का अवतार बताने वाले, दो नम्बर के ढोंगी, भगवाधारी धन सम्पत्ति के लोभी बने हुए हैं। मासूम बच्चियों, लाचार महिलाओं का यौन शोषण करते हैं, देह व्यापार में लगे हुए हैं। उनमें धर्म–कर्म नाम की कोई चीज दिखाई ही नहीं देती। बेईमानी, हिंसा, हत्या, क्रोध, कामवासना, लोभ, बलात्कार आदि की घटनाओं का ग्राफ ऊपर ही ऊपर जा रहा है। कन्या भ्रूण हत्या बढ़ रही है। माँ–बाप अनेक कुर्बानियों के बाद पुत्र प्राप्ति करके गौरवान्वित महसूस करते हैं। लेकिन अधिकांश पुत्र बड़े होकर औरंगजेब की तरह अपने माँ–बाप को सताते हैं। उनकी धन–सम्पत्ति पर कब्जा कर लेते हैं। माँ–बाप का अपमान, अवहेलना तथा तिरस्कार करते हैं। जन्म देने वाले माँ–बाप के मरने की ही रात–दिन दुआ करते हैं। माँ–बाप को जलील करके घर से निकाल देते हैं। कैसा घोर कलयुग है यह। आजकल परिवार में सुख–शांति नहीं है। कोई किसी का आज्ञाकारी नहीं है। बड़े तो बड़े छोटे–छोटे बच्चे हैं उनमें संस्कार नाम की कोई चीज नहीं है। उनमें क्रोध, आवेश, अहंकार, आपराधिक प्रवृत्ति तथा बड़ों के प्रति अनादर की भावना कूट–कूट कर भरी है। उन्हें शिक्षा संस्थाओं में जो शिक्षा दी जाती है वह सिर्फ पैसा कमाने के लिए ही होती है।। नैतिकता, शराफत, भाईचारा, समाजसेवा, ईमानदारी, कठिन परिश्रम या फिर देश के लिए कुर्बान हो जाने के साथ उनका कोई मतलब नहीं है।। आज के विद्यार्थी अपने गुरुजनों की इज्जत करने के बदले में उन पर वार करते हैं। आज के शिक्षक गुरु द्रोणाचार्य, विश्वामित्र आदि की तरह नहीं होते। आज के शिक्षाक अपने शिष्यों को समर्पित भावना से शिक्षा नहीं देते हैं। कुछ शिक्षक तो अपनी पुत्री समान शिष्याओं की इज्जत आबरू तार–तार करते सुने जा सकते हैं। मित्रों की बात भी जितनी कम की जाए उतना ही अच्छा है। आजकल श्रीराम तथा हनुमान जी की तरह निश्चल, निष्कपट तथा स्वार्थ रहित मित्रता कहाँ मिलती है। श्रीकृष्ण तथा सुदामा, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन, दुर्योधन तथा कर्ण जैसी मित्रता देखने को भी नहीं मिलती। आजकल के मित्रों की मित्रता मौसमी तथा स्वार्थी होती है। दोस्ती दुश्मनी में बदलते देर नहीं लगती।

आजकल के शासक पहले के शासकों की तरह नहीं। पहले शासकों का उद्देश्य लोगों का जनकल्याण होता था। वे भेष बदलकर जनता के बीच में जाकर उनकी समस्याओं का पता करते थे। और लोगों के दुख–दर्द दूर करने की कोशिश करते। लेकिन आज के शासकों में ऐसी बात नहीं। अधिकांश शासक सत्ता के नशे में मदमस्त रहते हैं। बेशक हमारे यहाँ हर पाँच साल बाद चुनाव होते हैं। जिसके तहत मतदाता अपनी पसंद के प्रतिनिधि चुनकर उन्हें सरकार बनाने का अधिकार देते हैं। फिर भी ये प्रतिनिधि जनहित में कम और स्वहित में ज्यादा चलते हैं। इनमें से बहुत सारे भ्रष्ट, व्याभिचारी, अधिकारों का दुरूपयोग करने वाले, सुर–सुरा में मस्त रहने वाले तथा जनता के प्रति लापरवाह होते जाते हैं। संविधान को तोड़–मरोड़कर जनता की भलाई के नाम पर सत्ता से चिपके रहने की कोशिश करते रहते हैं। शासक लोग भाईचारा, आपसी प्रेम भावना, सौहार्द बनाने तथा सभी धर्मों को समान समझने के बदले में लोगों को आपसमें लड़वाते हैं। दंगे करवाते देखा गया है। देखो अपने–अपने स्वार्थ साधन के हिसाब से हमारे नेताओं ने भारत विभाजन कराके पाकिस्तान बना दिया और विभाजन के ७१ साल गुजर जाने के बाद भी हिन्दुओं तथा मुसलमानों में ना सिर्फ मूलभूत समस्याएँ बरकरार हैं बल्कि पहले से ही कई गुना ज्यादा बढ़ गई हैं। हमारे शासक जनता को बेवकूफ बनाकर हर हालमें वोटों की राजनीति करते हैं। उन्हें जनकल्याण, देश की सुरक्षा, विकास आदि से कुछ नहीं लेना। आज दुनिया तबाही के कगार पर खड़ी है। इतने परमाणु, अस्त्र–शस्त्र, मिसाइलें, हथियार बन गए हैं कि दुनिया का कई बार विनाश किया जा सकता है। यहाँ चाहे अलग–अलग शासक हों, अलग क्षेत्रों, भाषाओं, सम्प्रदायों वाले लोग हों, एक–दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। किसी को कुछ भी हो सकता है। झूठ, पाखंड, लापरवाही, बेईमानी, सभी बढ़ रहे हैं। कोई किसी की शर्म–लिहाज नहीं करता किसी से नहीं डरता। हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है। आम आदमी के लिए जीना एक

स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी सुखदेव थापर जयंती पर

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सुखदेव का नाम हमेशा वीर जवानों की श्रेणी में लिया जाता रहा है और आगे भी लिया जाता रहेगा। इस क्रांतिकारी के बारे में जब भी बात होती हैं आंखों में गर्व के आंसू छलक जाते हैं। धन्य है ये भारत धरती जिसने इस महान सपूत को जन्म दिया।

आजादी के मतवाले भगत सिंह से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

क्रान्तिकारी सुखदेव का परिचय : सुखदेव का पूरा नाम सुखदेव थापर था। सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के शहर लायलपुर में श्रीयुत् रामलाल थापर और श्रीमती रल्ली देवी के घर पर १५ मई १९०७ को हुआ था।

शहीद-ए-आजम से दोस्ती : सुखदेव को भगत सिंह और राजगुरु के साथ २३ मार्च १९३१ को फांसी पर लटका दिया गया था। सुखदेव और भगत सिंह दोनों लाहौर नेशनल कॉलेज के छात्र थे। ताज्जुब ये है कि दोनों ही एक ही साल में लायलपुर में पैदा हुए थे और एक ही साथ शहीद हुए।

नौजवान भारत सभा का गठन : सुखदेव ने भगत सिंह, कॉमरेड रामचन्द्र और भगवती चरण बोहरा के साथ लाहौर में नौजवान भारत सभा का गठन किया था। सुखदेव ने क्रांतिकारी रूप लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये धरा और इस कारण वो भगत सिंह और राजगुरु के साथ आंदोलन में कूद पड़े थे। सुखदेव ने भारत मां की आजादी के साथ १९२९ में जेल में बंद भारतीय कैदियों के साथ हो रहे अपमान और अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में भी आवाज उठायी थी।

भगत सिंह और राजगुरू के साथ फांसी : अंग्रेजों के विरोध के चलते ही सुखदेव को भगत सिंह और राजगुरू के साथ फांसी की संजा हुई थी। २३ मार्च १९३१ को सायंकाल ७ बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी पर लटका दिया गया। जिस समय सुखदेव को फांसी हुई उनकी उम्र मात्र २३ साल थी। भारत मां के इस वीर सपूत को हमारा भी शत–शत नमन..।

चुनाव एक चुनौती

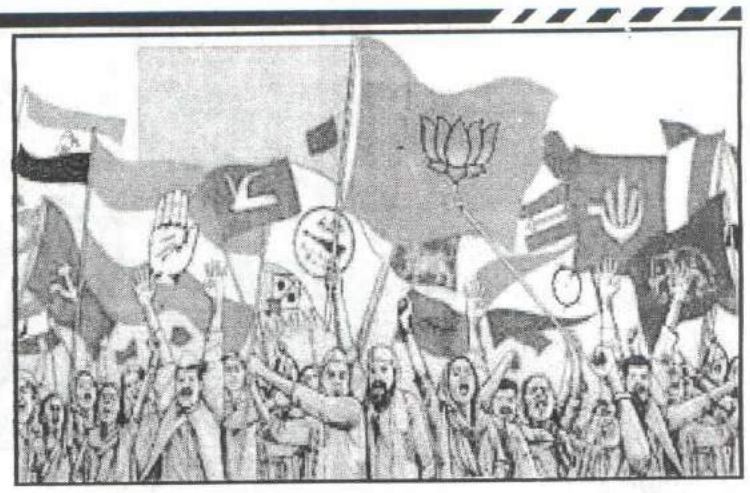

भारत की १७ वीं लोकसभा के लिए चुनाव प्रचार आज सर्वत्र अपने पूर्ण यौवन पर जन–जन को आकर्षित कर रहा है। युवा भारत विश्व की महान शक्ति बने ऐसा विमर्श सरल तो नहीं परंतु असंभव भी नहीं। आज राजनीति अनेक वाद–विवादों वाले वायदे और घोषणा पत्रों में अधिक हो रही है। लोकलुभावन और आकर्षक चुनावी घोषणा पत्रों में गंभीरता कम राजनैतिक चालबाजी अधिक प्रभावी होती जा रही है। धरातल पर इनके अनुरूप कुछ कार्य होगें ऐसा अब मतदाताओं को विश्वास नही रहा। राजनैतिक कर्मज्ञों के अभाव में देश की राजनीति में सिद्धान्तों का शनें–शनें पतन हो रहा है। परनिंदा व आत्मस्तुति पर नये नये तर्क–वितर्क चुनावी जंग में हथियार बनते जा रहे है। शालीनता व शिष्टाचार की सारी सीमाएं लांघने वाले विवादित बयानों की होड़ ने चुनावी प्रचार को झगड़ालू बना दिया है। विभिन्न नेताओं द्वारा एक–दूसरे पर कीचड़ उछालने की स्पर्धा से लोकतांत्रिक मूल्य आहत हो रहें है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसी प्रतिद्वंदिता से न तो समाज का कोई भला हो सकता है और न ही देश का विकास सत्ता पाने के लिए नेताओं की सोच इतनी अधिक आत्मघाती व कुटिल हो गई है कि वे मुस्लिम परस्त बनें रहने के लिए देश के शत्रुओं को भी लाभ देने के मार्ग ढूंढ रहें हैं। जबकि धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में स्पष्ट रूप से अल्पसंख्यवाद के नाम पर मुसलमानों को सामान्य अधिकारों के अतिरिक्त अनेक विशेषाधिकार स्वतंत्रता के बाद से ही निरंतर दिए जाते आ रहें। क्या लोकतांत्रिक व्यवस्था में धर्मनिरपेक्ष संविधान का उल्लंघन उचित होगा?

चुनाव आयोग के कड़े नियमों का पालन होने से पूर्व की भांति चुनावी प्रचार गलियों व सड़कों पर अब नही दिखता। जगह–जगह विभिन्न उम्मीदवारों के झंडों, पोस्टरों व बैनरों से पटे बाजार व मुख्य मार्ग अब स्मृतियां बन चुकी है। जिस प्रकार पूर्व में चुनावों के समय कार्यकर्ताओं की टोलियां उम्मीदवारों के प्रचार के लिए अपने–अपने क्षेत्रों में चुनावी वातावरण बनाती थी वह उत्साह भी अब देखने को नही मिलता। इस रिक्तता को भरने के लिए आज के इलेक्ट्रॉनिक युग व समाज के आत्मकेंद्रित व्यक्तित्व के कारण चुनावी प्रचार की मुख्य भूमिका टीवी समाचार चैनलों ने सम्भाल ली है। चुनावी घोषणाओं के पहले से ही कुछ समाचार चैनलों ने बड़ी–बड़ी राजनैतिक बहस आरम्भ कर दी है। प्रायः जैकेट व कुर्ता धारी विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रवक्ताओं की छोटे–बड़े विभिन्न विषयों पर विवादित नोंक छोंक टीवी एंकरों के ज्ञानवर्धन में भी सहयोगी हो रही है। टीवी चैनलों द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का निरंतर चलन महत्वपूर्ण बिषयों से अपने दर्शकों को अवगत कराने का एक प्रमुख कार्य कर रहा है। आज जब अनेक समाचार पत्र व पत्रिकाएं भी चुनावी समाचारों से भरें रहते है व उनमें भीं अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं होती है फिर भी टीवी चैनलों पर लाइव बहस सामान्य जन को अधिक प्रभावित कर रही है।

आज के अमर्यादित व विवादित चुनावी वातावरण में भारतीय परिवेश में चुनाव एक चुनौती पर चिंतन करना श्रेष्ठ जनों का दायित्व है। आदर्श व सिद्धान्तों पर आधारित भारतीय मूल्यों के अनुरूप चुनावों में राष्ट्र रक्षार्थ जन जन को सक्रिय करना होगा। प्राचीन काल से भारत की धरती ओजस्वी आचार्यों व ऋषि–मुनियों के सार्मथ्य से गौरवान्वित होती रही है। परंतु दासता काल के लगभग ६००–१००० वर्षों की अवधि ने धर्मान्ध आक्रांताओं के अत्याचारों से मुक्ति के पश्चात् स्वतंत्र भारत में सत्तालोलुप मानसिकता ने हमें आदर्शहीनता में जकड़ दिया। परिणामस्वरूप चारित्रिक व नैतिक पतन होने से अनेक राक्षसी प्रवृतियां बलवती होती रहीं। आज देश

विनोद कुमार सर्वोदय

की लोकतांत्रिक व्यवस्था सुदृढ़ समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए ब्रिटिश संविधान के ही प्रारूप पर आधारित बनें भारतीय संविधान के अनुरूप कार्यरत है। इसी के अंतर्गत देश की सर्वोच्च संस्था लोकसभा के सदस्यों का चुनाव अत्यधिक महत्व का विषय है। तदानुसार समस्त वयस्क भारतीय नागरिकों को इस चुनावी प्रक्रिया में मताधिकारी बनाया हुआ है। ऐसे में समाज को राष्ट्र के प्रति जागरूक करके उसकी सक्रियता का लाभ देश को कैसे मिलें यह प्रश्न अपने आप में जटिल बना हुआ है?

मुख्यतः स्वतंत्रता के पश्चात् बनी परिस्थितियों ने देशवासियों में ऐसा कोई बीजारोपण नही किया जिससे उनमें राष्ट्र के प्रति कोई कर्तव्य या दायित्व का भाव जागता। तत्कालीन नेताओं ने ऐसी कोई भूमिका नही निभायी जिससे नागरिकों में समाज व देश के प्रति कोई सकारात्मक सोच विकसित होती। लेकिन यह अवश्य हुआ कि स्वार्थ के वशीभूत सत्ता सुख व लोभी–लालची मानसिकता निरंतर फलीभूत होती रही। राष्ट्रीय संसाधनों की लूट को बड़े सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए कुछ भ्रष्ट नेताओं की नकारात्मक मानसिकता ने समाज को अपराधी व भ्रष्टाचारी बना दिया। साम्प्रदायिकता, अलगाववाद व आतंकवाद जैसी निरंतर बढ़ती समस्याओं व अन्य सामाजिक संगठनों के कारण राजकोष पर बढ़ता बोझ भी नेताओं की दूषित कार्यशैली का दुष्परिणाम है। सामान्यतः यह भी देखा जा रहा है कि क्षेत्र, जाति व सम्प्रदाय/धर्म को आधार मान कर छोटे–छोटे राजनैतिक व सामाजिक संगठनों का गठन बढ़ रहा है। जबकि इन संगठनों में समस्त समाज व राष्ट्र के हितों की सर्वव्यापी सोच बन ही नही पाती। परिणामस्वरूप इनके नेता राष्ट्रीय

शेष पृष्ठ 10 पर

निर्दोष धर्माचार्या का उत्पीडन

वर्षों तक एक विचाराधीन कैदी साध्वी प्रज्ञा को पुरुष पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा कठोरतम मानसिक व शारीरिक पीड़ा देना मानवाधिकार व न्याय व्यवस्था का खुला उल्लंघन है। क्यों नहीं ऐसे क्रूरतम कांड के जिम्मेदार सरकारी व राजनैतिक दोषियों पर सर्वोच्च न्यायालय संज्ञान लेता? ऐसा अगर किसी मुस्लिम या ईसाई के साथ होता तो सेक्युलर व मानवाधिकारवादी मंडली अब तक भारत सरकार को कटघरे में खड़ा कर चुकी होती। लेकिन हिंदुओं की उदारता उन्हें कायर बनाये रखती है। स्वार्थ वश वे किसी न किसी राजनेता के अंधभक्त बनने को विवश होते रहते हैं। इसी कारण धार्मिक प्रेरणा के ओझल होने से उनमें स्वाभिमान व तेजस्विता का निरन्तर अभाव होता जा रहा है।

अपवाद स्वरूप साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर जैसे धर्म योद्धाओं की जिजीविषा को तोड़ा जाता है। उनका मानमर्दन करके उनको इतना उत्पीडित किया जाता है कि भविष्य में अन्य कोई ऐसा साहस ही न कर सकें। क्या कारण है कि किसी मुसलमान व ईसाई सजायाफ्ता अपराधियों के साथ भी ऐसे दर्दनाक उत्पीडन का शासकीय व प्रशासकीय आधिकारियों में साहस नही होता? आपको स्मरण होगा कि २६.११.२००८ मुम्बई को लगभग ६० घंटे तक बंधक बनाने वाले आतंकवादी हमलों में पकड़ा गया अजमल कसाब को स्वादिष्ट व्यंजन परोसने में अधिकारियों ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यद्दपि कालांतर में उसे उसके जिहादी अपराधों पर फांसी दी गई। लेकिन चिंतन करना होगा कि निर्दोष धर्माचार्या का अपमान व उत्पीडन करने वाले अधिकारी (मृत्युपरांत) हेमंत करकरे व उनके साथी क्षमा योग्य कैसे हो सकते हैं? जबकि आतंकवादियों के लिए (सितंबर २००८) यमराज बनें शहीद मोहनचंद शर्मा के बलिदान पर गर्व करने के स्थान पर उनकी वीरता पर संदेह करके आतंकियों को उत्साहित करने वालों की देशभक्ति पर संदेह अवश्य होता है। अतः आज देश की बर्बादी तक जंग करके टुकड़े–टुकड़े करने की देशद्रोही मानसिकता वाले और उनके सहयोगियों को ढूंढ–ढूंढ कर कारागारों में डालना होगा और साध्वी प्रज्ञा जैसे भारतीय अस्मिता व स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने वालों से प्रेरणा लेकर राष्ट्रोत्थान में भागीदार बनना होगा।

स्वाधीनता संग्राम और आर्यसमाज

✍ सत्यप्रिय शास्त्री

राजनीतिक स्वतन्त्रता के क्षेत्र में गाँधी जी के गुरु गोपालकृष्ण गोखले माने जाते हैं। गोखले को यह विचार अपने आचार्य महादेव गोविन्द रानडे से प्राप्त हुआ। परन्तु रानडे तक यह विचार उनके गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती से पहुँचा था। पूना में १८७५ में इनका समागत हुआ था। घनिष्ठता यहाँ तक बढ़ी कि महर्षि ने रानडे को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा में नियुक्त किया था। इस प्रकार गाँधी जी को यह विचार मूलतः महर्षि दयानन्द से ही मिला था।

ग्रह भिन्न बात है कि गाँधी जी के हिन्दू–मुस्लिम एकता विषयक विचार महर्षि से भिन्न थे। यह गाँधी जी के विदेशी शिक्षा से प्राप्त चिन्तन पर आधारित थे और उतने ही अंश में वे सदा असफल रहे।

अस्तु, गाँधी जी को महात्मा पद से विभूषित करने वाले अमर शहीद स्व. श्रद्धानन्द जी थे जिनका कांग्रेस के मंच पर भी समान प्रभाव रहा है। स्वाधीनता की तीन मूर्तियों में लाजपत राय तो महर्षि के प्रकट शिष्य थे, आर्यसमाजी नेता इंद्र विद्यावाचस्पपति का योगदान भी किसी से कम नहीं था।

देशबन्धु गुप्ता, घनश्याम सिंह गुप्त, भीमसेन सच्चर, म. कृष्ण एवं उनके दोनों पुत्र, म. खुशहालचन्द (महात्मा आनन्दस्वामी) तथा उनके सभी पुत्र, सिन्ध के ताराचन्द गाजरा, हैदराबाद के पं. विनायकराव, उ. प्र. के चौ. चरणसिंह, चन्द्रभानु गुप्त, गोविन्दवल्लभ पन्त, लालबहादुर शास्त्री, राजस्थान के चांदकरण शारदा, कर्मवीर श्री जियालालजी, हरियाणा के आचार्य भगवान देव जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, पंजाब के चौ. वेदव्रतजी, वैद्य रामगोपाल जी, अजितसिंह सत्यार्थी, देशप्रसिद्ध वक्ता, कु. सुखलाल जी, आर्यमुसाफिर, बिहार के स्वा. अभेदानन्द जी; इसी प्रकार डॉ. गोकुलचन्द नारंग, स्वा. परिव्रजक इत्यादि सभी लोग आर्यसमाज से स्वाधीनता की प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं, इतना ही नहीं बल्कि दादाभाई नौरोजी ने भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर उससे स्वाधीनता की प्रेरणा ली थी।

अहिंसात्मक सत्याग्रहों में सर्वप्रथम १६२१ का असहयोग आन्दोलन हुआ, जिसमें सरकार का सहयोग त्याग दिया गया। यद्यपि ऋषि दयानन्द सरस्वती तो परोपकारिणी सभा की स्थापना के समय ही बीजारोपण कर गए थे क्योंकि उन्होंने उसके नियमों में लिखा है कि इसका पारस्परिक कोई भी झगड़ा सरकारी अदालत में न भेजकर आपस में ही निपटाना चाहिए, यही बीज इस आन्दोलन की घोषणा महात्मा गाँधी जी ने की। कभी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गाँधी को तार देकर इस युद्ध में सम्मिलित होने की सूचना दी।

सूचना में लिखा कि मैंने धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने का पूर्ण निर्णय कर लिया है। पाठक जरा सोचो कि आर्यसमाजियों की दृष्टि में देश की स्वतन्त्रता के हेतु लड़ा जाने वाला संग्राम धर्मयुद्ध है। बस स्वामी जी के सम्मिलित होते ही प्रत्येक आर्यसमाजी जी–जान से उक्त आन्दोलन में कूद पड़ा।

इसका स्थालीपुलाकन्याय से कुछ प्रामाणिक वृत्त निम्न है। जहाँ कहीं भी आर्यसमाज व आर्यसमाजी थे, वहीं कांग्रेस की शाखाएँ सुदृढ़ थीं। मेरठ जिले के दो हजार सत्याग्रहियों में से अधिकांश आर्यसमाजी ही थे, जिला बुलन्दशहर के कठोर, यातनाएँ सहने वाले सत्याग्रहियों में अधिकांश आर्यसमाजी ही सत्याग्रही थे, आर्यसमाज के उपदेशक तथा कांग्रेसी नेता स्व. पं. शेरसिंह जी के अनुसार उस समय जेलों में ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे।

कहते हैं कि पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में उस समय सत्याग्रहियों की जाँच के लिए एक कमेटी बनाई गई थी, जिसकी रिपोर्ट का सारांश था कि सत्याग्रहियों में लगभग सत्तर प्रतिशत आर्यसमाजी विचारधारा के लोग हैं। जब महात्मा गाँधी ने इसके साथ खिलाफत जैसे विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्न को नत्थी कर दिया और अपनी काल्पनिक अहिंसा नीति को बरकरार रखने के कारण इसे स्थगित कर दिया, तब सारा देश निराशा के समुद्र में डूब गया तथा साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे, जिसका मूल कारण गाँधी की अदूरदर्शिता ही थी। इसके पश्चात् १६३१ में एक बार फिर देश ने गाँधी जी के नेतृत्व में अंगड़ाई ली। इस आन्दोलन में भी आर्यसमाजियों को अग्र पंक्ति में खड़ा हुआ पाते हैं, जो कि निम्न प्रमाणों से सिद्ध होता है।

यदि समूचे उत्तर प्रदेश में सत्याग्रहियों की संख्या दो लाख थी तो उनमें आर्यसमाजियों की संख्या पचास हजार तो निर्विवाद ही थी।

आर्यसमाजी देवियों ने तो कमाल ही कर दिया, उनमें विद्यावती, सत्यवती, वरसोदेवी, प्रकाशवती तथा शकुन्तला जी मुख्य थीं जो कि आर्यसमाज मेरठ की सदस्या थी, रामकली जी ने तो अपने तीन नन्हें बालकों के साथ धरना दिया था। इसी प्रकार शोभावती, अम्बादेवी हलद्वानीवाली ने भी कारागार में यातनाएँ सहीं। हापुड़ में तो श्री पं. शिवदयालजी ने विशाल राजनीतिक सम्मेलन की अध्यक्षता की और वहाँ के हजारों सत्याग्रहियों के साथ रेलयात्रा की। पंजाब में इसका गुप्त संगठन एवं संचालन स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज कर रहे थे।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय की तलाशी भी पुलिस ने बड़ी गहराई से ली थी, क्योंकि स्वामी जी उसके आचार्य थे, वहाँ के छात्रों ने भी उक्त आन्दोलन में भाग लिया था। आगरा मुसाफिर महाविद्यालय, जहाँ आर्यसमाज के लिए उपदेशक तैयार किए जा सकते थे, इन्हीं आन्दोलनों की चपेट में आकर बन्द हो चुका था।

गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामदेवजी ने भी अपने छात्रों के एक विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रह कर रेलयात्रा की थी। गुरुकुल अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया था। जब १६३५ में कांग्रेस असेम्बलियों में जाने का कार्यक्रम बनाया और चुनाव लड़े, तब भी उससे अधिक संख्या निर्वाचित सदस्यों में आर्यसमाजियों की ही थी।

अब आती है भारत की आजादी की आखिरी मुहिम, १६४२ का आन्दोलन। इस आन्दोलन में "करो या मरो" के गाँधी जी के नारे पर अपनी जान की बाजी लगाने वाले देशभक्तों में भी सबसे अधिक संख्या आर्यसमाजियों की ही थी।

मिलाप परिवार, प्रताप परिवार सभी पहले से ही जेलों में धर लिए गए थे, गुजरांवाला गुरुकुल (पंजाब) में तो पुलिस ने

घुसकर छात्रों तथा अध्यापकों को पीटा था। गुरुकुल घरौंडा (करनाल) को जिलाधीश जब्त करने का षड्यंत्र कर रहा था क्योंकि वहाँ के छात्रों ने अपने आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी के निर्देशन में समीपस्थ रेलवे लाइन को उखाड़ दिया था।

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) में महीनों पुलिस घेरा डाले पड़ी रही थी क्योंकि वहाँ के आचार्य भगवानदेव सरकार विरोधी गतिविधियों में तल्लीनथे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को भयंकरतम जान कर लाहौर के शाही किले में नजरबन्द किया गया, क्योंकि इन्होंने हरियाणा प्रांत में घूमकर किसानों से अपील की थी कि वे सेना में भरती हुए, अपने लोगों को कहें कि वे देशभक्तों पर गोली न चलाएँ, इसको सरकार ने राज्यविद्रोह समझा। उस समय स्वामीजी ने अंग्रेज सरकार को यह भी कहा कि हमारे सत्याग्रहियों से सरकार वह व्यवहार करे जैसा कि एक सरकार दूसरे देश के बन्दियों से किया करती है।

पाठक इसकी गहराई में जाने का प्रयास करें। उस समय सरकार ने जिन तीन व्यक्तियों को सबसे अधिक भयानक करार दिया था उनमें से अलगूराय शास्त्री तथा पं. शिवदयालू दो आर्यसमाजी थे। उस समय जब चारों ओर नाकाबंदी कर दी गई थी तब पंजाब के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता पं. रामभजदत्तजी गुप्त रूप में कांग्रेजी नेताओं से सम्पर्क कायम करके उनका संदेश जनता तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते थे।

इस आन्दोलन में हजारों आर्यों के घर उजड़े तथा हजारों ही बायनेटों तथा हण्टरों के शिकार बने। सारी ही आर्यसमाजी संस्थाएँ देशभक्तों के सिर छिपाने के विश्वस्त अड्डे साबित हुई थीं।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाजी भजनीकों ने गाँव–गाँव में बाजे–ढोलकों को गा–गा बजा–बजा कर जो जागृति उत्पन्न की वह अपने आपमें एक स्वर्णिम अध्याय है।

लेखक को स्मरण है कि उक्त आन्दोलन के समय इनके चाचा श्री हरलाल सिंह जी कुरते के नीचे तिरंगा झंडा छिपाए गाँवों में भजनों द्वारा जागृति उत्पन्न करते फिरते थे और इधर पुलिस हाथ में हथकड़ी लिए उन्हें पकड़ने के उद्देश्य से कई मास तक घेरा डाले पड़ी रही थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत की स्वाधीनता के लिए अहिंसात्मक पद्धति से जो लड़ाई लड़ी गई उसमें आर्यसमाजियों ने अन्यों की अपेक्षा अधिक बढ़–चढ़कर भाग लिया। यह तथ्य इतिहास के प्रमाणों से सिद्ध हो जाता है। भारत की आजादी के हेतु लड़े जाने वाले संग्राम का सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण एक और पहलू है।

सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन में योगदान–जिसे सामान्य भाषा में क्रान्तिकारियों का योगदान कहा जाता है, इस दृष्टि से विचारने पर तो आर्यसमाज का एक प्रखर राष्ट्रीय स्वरूप हमारे सामने आता है; जिस पर सारे आर्यजगत को गौरव तथा गर्व है। इस दृष्टि से देखें तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर शिष्य क्रान्तिकारियों के पितामह श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम हमारे सामने आता है। इनको महर्षि ने ही विदेशों में भेजा था, जहाँ जाकर इन्होंने इण्डिया हाऊस की

शेष पृष्ठ 11 पर

भारतीय वैदिक साहित्य में विज्ञान दर्शन

✍ डॉ. अर्चना रामजीत दुबे

अब तक आपने विज्ञान के अनेक स्वरूपों को देखा है, जैसे कि साहित्य और विज्ञान का समुच्चय हमेशा देखने को मिलता है। साहित्य की वैज्ञानिकता तत्कालीन विज्ञान की सार्थकता पर निर्भर करती है। साहित्य अपनी असीमित कल्पनाओं में भ्रमण अवश्य करता है, परंतु जब वह विज्ञान को समावेशित करता है, तब साहित्य की सार्थकता का भाव होता है। वैश्विक संस्कृतियों ने जब–जब साहित्य एवं विज्ञान को समांतर रेखा में रखते हुए रचनाएँ की हैं, तब–तब उन संस्कृतियों ने मानव जीवन के उच्च ध्येय को प्राप्त किया है। हमारे आधुनिक साहित्य और आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में भी यह बात देखने को मिलती है। इस लेख में भारतीय वैदिक साहित्य एवं विज्ञान की परस्पर पूरकता को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

इसके लिए आपके सामने संस्कृत के कुछ श्लोकों का उल्लेख करना चाहूँगी। वाल्मीकि कृत 'गणेश स्तोत्र' में लिखा है–

'चतुःषष्टि कोटख्य विद्याप्रदं त्वां सुराचार्य विद्या प्रदानापदानम्'। अर्थात् गणेश्वर आप चौंसठ कोटि विद्याओं के दाता तथा देवताओं के आचार्य बृहस्पपति को विद्या प्रदान का कार्य पूर्ण करने वाले हैं।

वाल्मीकि के इस श्लोक से यह विदित होता है कि प्राचीन साहित्य में विद्या एवं कौशल का समुचित ढंग से वर्गीकरण किया गया था। जैसा ज्ञात है कि भारतीय वैदिक साहित्य में अनेकों प्रसंग एवं रचनाएँ ऐसी हैं जो आधुनिक विज्ञान–वृक्ष की मूलता को प्राचीन कल्पना एवं सुविचारों का प्रतिबिंब मात्र सिद्ध करती हैं। इसी का दूसरा श्लोक है–**'अनादिम ध्यान्तविहीनमेकं तमेकदन्तं शरणं ब्रजसमः'।** अर्थात् जिनका आदि मध्य अंत नहीं है...। इस श्लोक के माध्यम से हमें गणित की 'असीमित' संख्या का मूल स्रोत जान पड़ता है।

'ततस्त्वया प्रेरित नादकेन सुषुप्तिसंज्ञ रचितं जगद् वै'। इस श्लोक से यह प्रतीत होता है कि प्रारंभिक सृष्टि का निर्माण नाद शब्द से हुआ है, जिसे हम कंपन कहते हैं। कंपन एवं सृष्टि–रचना आधुनिक विज्ञान के श्लोक 'बिग बैंग' (महा विस्फोट) के सिद्धांत की मूल उत्पत्ति है।

त्वदाज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे, प्रकाशरूपाणि विभान्ति खे वै।

भ्रमन्ति नित्यं स्वविहार, कार्यास्त्मेकदन्तं शरणं ब्रजामः

इस श्लोक से यह सिद्ध होता है कि भारतीय वैदिक साहित्य में ग्रहों, तारों एवं अन्य खगोलीय घटनाओं का विवरण एवं निरीक्षण किया गया था। 'लम्बोदर' शब्द गणपति के नामों में से एक है, जिसका अर्थ है कई ब्रह्माण्डों को अपने उदर में धारण करने वाले। यह सिद्ध करता है कि आधुनिक विज्ञान के समांतर अंतरिक्ष के शोध विषय, तत्कालीन प्राचीन समय के सिद्धांत हुआ करते थे।

प्राचीन भारत के मनीषियों ने मानव जीवन के कल्याण हेतु पर्यावरण का महत्व और उसकी रक्षा, प्रकृति से सान्निध्य, संवेदनशीलता, रोगों के उपचार तथा स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी तत्व प्राप्त किए थे। वैदिक साहित्य में पर्यावरण के महत्व और उसकी रक्षा को स्पष्ट किया गया है। वेदों में पर्यावरण को अनेक वर्गों में बाँटा गया है, जैसे–वायु, जल, ध्वनि, खाद्य, मिट्टी, वनस्पति, वन–संपदा, पशु–पक्षी संरक्षण आदि। अगर हम 'यजुर्वेद' (२७/१२) को देखें, तो उसमें वायु की शुद्धता पर विशेष ध्यान देते हुए कहा गया है–'उत्तम गुण वाले पदार्थों में उत्तम गुण वाला प्रकाश रहित जो वायु शरीर में नहीं गिरता वह कामना करने योग्य मधुर जल के साथ श्रोत आदि मार्ग को प्रकट करे उसको तुम जानो'।

एक और उदाहरण के तौर पर यदि हम 'ऋग्वेद' (१४/१२) को देखें, तो उसमें कहा गया है कि 'याद रखिए शुद्ध–ताजा वायु अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है, वो हमारी आयु को बढ़ाता है'।। इस प्रकार वैदिक साहित्य में जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण, मिट्टी एवं वनस्पति प्रदूषण के निदान की चर्चाएँ दिखाती हैं। आधुनिक विकासवाद के मतानुसार वैदिक साहित्य में उच्च सभ्यता के प्रमाण नहीं मिलते, परंतु वेद इनके मतों की सत्यता पर ही कुठाराघात करते हैं। उदाहरणार्थ–वेदों में विमानों का वर्णन एवं उसके निर्माण का वर्णन मिलता है। प्राचीन समय में मानव द्वारा विमानों के उपयोगों का वर्णन एवं उसकी परिकल्पना अप्रतिम है। इसका प्रमाण हमें 'ऋग्वेद' (४/३६/०२) में मिलता है, जिसमें

शेष पृष्ठ 11 पर

नारद जयंती पर विशेष

नारद जयंती को देवऋषि नारद की जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। ऋषि नारद प्रजापतियो और महान सप्तऋषियों में से एक है। देवर्षि नारद भगवान के सर्वश्रेष्ठ भक्तो में से एक माने जाते हैं। श्रद्धालु इन्हे भगवान का मन कहते है। नारद मुनी को संचार का देवता माना जाता है। कुछ पुराणो के अनुसार देवऋषि नारद भगवान ब्रह्मा के माथे से प्रकट हुए थे जबकि विष्णु पुराण के अनुसार वह ऋषि कश्यप के पुत्र है। ऐसा कहा जाता है कि वह पूरी दुनिया में भगवान की भक्ति और भावना के विस्तार के लिये अपनी वीणा की मधुर तान पर भगवद्गुणों का गान करते हुए गायन और सूचना संवाद के माध्यम से लगातार यात्रा करते रहते थे। श्रद्धालु मानते है कि देवऋषि नारद आज भी भक्तो की सहायता करते रहते हैं और भक्तों की बात भगवान तक पहुंचाते हैं, ताकि उनके कष्ट का निवारण हो सके। इनके द्वारा प्रणीत भक्ति सूत्र में भगवद् भक्ति की अति सुन्दर व्याख्या है। नारद जी ने भक्त प्रहलाद, भक्त अम्बरीष और ध्रुव आदि भक्तों को ज्ञानोपदेश देकर भगवद प्राप्ति का मार्ग दर्शाया। इनका जीवन विश्व के मंगल के लिये ही है। देवऋषि नारद ज्ञान के स्वरूप, विध्या के भण्डार, आनन्द के सागर तथा सब भूतों के अकारण प्रेमी और विश्व मंगल के हितकारी हैं। हिन्दू संस्कृति के दो बहुमूल्य ग्रंथ रामायण और भागवत के प्रेरक नारद जी का जन्म लोगों को सन्मार्ग और भक्ति के मार्ग पर लाकर, विश्वकल्याण हेतु हुआ था। ऋग वेद में नारद मुनी के कुछ भजनो के वर्णन हैं। नारदजी को वीणा के साथ एक संन्यासी के रूप में दर्शाया जाता है जो कि एक सकारात्मक सोच के साथ या ब्रह्मांड के उत्थान के लिए ज्ञात रूप से परेशानी उत्पन्न करते हैं। नारद जयंती वैशाख माह (अप्रैल–मई) की पूर्णिमा तिथि (पूर्णिमा दिवस) को मनाया जाता है। देवऋषि नारद को आज के समय अनुसार एक पत्रकार और संचार के अग्रदूत भी कहा जा सकता है। नारद जयंती को पत्रकारिता दिवस भी कहा जाता है और पूरे देश में इस रूप में मनाया जाता है। देवऋषि नारद को वीणा का आविष्कारक भी माना जाता है और वह गंधर्वो के प्रमुख हैं, जोकि दिव्य संगीतकार थे। उत्तर भारत में इस अवसर पर बौद्धिक बैठकें, सेमिनार और प्रार्थनाएं आयोजित की जाती हैं। नारद जयंती पर्व के माध्यम से पत्रकारों को अपने आदर्शो पालन करने के संकल्प लेकर समाज के लोगों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर लोक कल्याण के उद्देश्य कि प्राप्ति हेतु कार्य करने चाहिए।

१६ मई जयंती पर विशेष

परिशिष्ट नथूराम का माडखोलकर को पत्र

✍ गोपाल गोडसे

काम तो बहुत है और समय अधूरा है जिसका ध्यान नथूराम को सदा रहता था। श्री ग० त्र्यं. माडखोलकर की (नागपुर के मराठी दैनिक' तरुण भारत' के संपादक) लिखी' एक निर्वासित की कहानी' (एका निर्वासिताची कहानी) उसने पढ़ी थी। नथूराम की तीव्र इच्छा थी कि माडखोलकर जी को पुस्तक पर अपने विचार बताएँ। नया कागज लेना, पत्ररूप में अभिप्राय लिखना, इसके लिए भी नथूराम के पास समय नहीं था। उस 'निर्वासित की कहानी' पुस्तक पर ही, जो कोरे भाग और अधकोरे पन्ने थे उन्हीं पर उसने अपने विचार लिखे।

१४ नवम्बर, १६४६ को अर्थात् फाँसी के पहले दिन उसने वह पत्र लिखा। फाँसी लगने के पश्चात् नथूराम की निजी वस्तुओं और पुस्तकों की अधिकारी–वर्ग ने छानबीन की। फिर वह सामग्री संबंधियों को लौटा दी गई। मेरे बंधु श्री दत्तात्रेय ने वह पुस्तक और उस अभिप्राय की एक प्रतिलिपि श्री माडखोलकर जी के पास आठ दिनों पश्चात् पहुँचा दी। पूना के 'सोबत' मराठी साप्ताहिक के संपादक श्री ग. वा. बहेरे ने उपर्युक्त पत्र दीपावली, १६७० के अंक में प्रकाशित किया है। पत्र का जो साहित्यिक अथवा वाडगमयी अंग है, उसके लिखित निवेदन के भावनात्मक अंग के प्रकाश में रसग्रहण किया जाय, इस हेतु पत्र यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

अंबाला, १४ नवम्बर, १६४६

प्रिय लेखक महाशय,

निर्वासित की कथा पढ़ी। विचारपूर्वक पढ़ी। आपकी लेखनी मूलतः ही महाराष्ट्र में लोकप्रिय है। और इस कहानी का कथानक तो सत्य घटना है और इसलिए इस कहानी में प्रेम, अनुकम्पा, आदर, संताप, तिरस्कार, दुःख आदि नानाविध भाव अति प्रखरता से प्रकट हुए हैं। आपकी मनोव्यथाएँ और आपके विविध, विचार–तरंग वास्तविकता की पृष्ठभूमि पर आपने शब्दांकित किए हैं और इसलिए आपके आजकल के कई'डाक बंगलों' की अपेक्षा ('डाक बंगला' श्री माडखोलकर जी का एक उपन्यास है) आपका 'भग्नघर' (यह भी उनका एक उपन्यास है) साहित्य सृष्टि में अधिक समय टिका रहेगा।

श्रीमान् लेखक महाशय! आपके किसी आंदोलन का और आपके सर्वसामान्य सौजन्य का मैं एक प्रेमी हूँ और रसज्ञ भी। कुछ समय आपके सुखद सहवास का आस्वाद भी मैंने लिया है। मुझे जिस परिमाण में आपके बारे में पहले प्रेम रहा है, उसी मात्रा में आज भी, आपकी पुस्तक पढ़ने के पश्चात् भी स्थिर है। और मैं यह भी जानता हूं कि मेरे बारे में आपके अंतःकरण में बिना आत्यांतिक तिरस्कार के और कोई भावना नहीं रही होगी।

और इस पर भी मैं यह लिख रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप इसे पढ़ेंगे और इस पर विचार करेंगे। मैं भी आज ये शब्द स्वर्गारोहण की सिद्धता की स्थिति में लिख रहा हूँ। मेरी चित्तवृत्ति शांत है। मन उल्लसित है। मुझे लगता है, आपकी कथा के पीछे जैसे एक वास्तविकता की भूमिका है, उसी प्रकार मेरे इस पत्र के पीछे भी एक अननुभूत और क्वचित ही दृष्टिगोचर होने वाली पार्श्वभूमि चित्रित है। मैं पत्रकार था, किन्तु मैं साहित्यिक नहीं हूँ। तथापि साहित्य मेरी रुचि का विषय था और साहित्य का थोड़ा बहुत आस्वाद चखने जितनी रसज्ञता मुझ में है। यह मेरी धारणा है और इसीलिए मुझे लगता है कि जिस परिस्थिति में मैं यह पत्र लिख रहा हूँ वह साहित्यिक का हृदय कंपित किए बिना नहीं रहेगी। अस्तु

आपकी' एक निर्वासित की कहानी' में आपके इस प्रसंग के और भी अनेक निर्वासितों और विध्वंस के वर्णन हैं। एक अंग का यह विध्वंसन और उसके मूल में गांधी–वध का कारण। आपके अंतःकरण पर गांधी–वध से आघात हुआ। आप में से ही एक ने यह वध किया, इसलिए लज्जा और संताप आपको अनिवार्य हुआ और विध्वंसन के कारण आपकी भावनाओं में उद्वेग, अनुकंपा और अन्य विकारों के कल्लोल भी भरमार हुई।

उपर्युक्त घटनाएँ जैसे–जैसे मैं जानने लगा, मेरी भी भावनाएँ कुछ सीमा तक आपके जैसे ही हो गई। आप माने या न माने, किन्तु मूलतः मैं निर्दय वृत्ति का मनुष्य नहीं हूँ। सहृदयता के और सर्व–साधारण सौजन्य के धागों से ही मेरा स्वभाव बना है। मेरे मित्र ही क्या, अनेक आरक्षी अधिकारी और बंदीपाल भी मेरी उक्त बात की संपुष्टि करेंगे, आप छानबीन करें।

तो फिर मैंने यह भयानक कृत्य क्यों किया? लेखक महाशय! इसी के साथ आप को विनती है कि कवि की दिव्यदृष्टि से अथवा मनो वैज्ञानिक की सूक्ष्मदर्शिका के सहारे मेरे निम्नलिखित विचारों को देखें और फिर चाहें तो उन्हें फेंक दें।

मेरे क्रूर कृत्य का उद्गम सहृदयता और स्त्री दाक्षिण्य इनकी आत्यन्तिक भावनाओं में है। जन–निन्दा अथवा मृत्युदण्ड, ये दोनों परिणाम भी मैं जानता था, तो भी उपर्युक्त भावनाओं की तुलना में मुझे वे हीन भाव प्रतीत हुए। मेरे न्यायालयीय वक्तव्य का बहुत–सा–भाग सत्य इतिहास है और कुछ भाग अन्तःकरण से लिखा साहित्य है, किन्तु वह लोगों के सामने लाने से शासन को डर लगता है। इसी बात से उसका प्रभाव मुझे प्रतीत होता है और वह वक्तव्य यदि आपको समग्र विदित हुआ तो मेरे कृत्य का कारण अच्छी प्रकार आपके ध्यान में आएगा। भले मेरे कृत्य की निन्दा आप कितनी भी करें, किन्तु मेरी भावनाओं की निन्दा करना आपके लिए प्रामाणिकता से उचित नहीं होगा।

देश–विभाजन लोगों को अंधेरे में रखकर या नेतागणों ने अंधेरे में रहकर किया। गांधी यदि सत्यवादी होते तो देश–विभाजन का वे विरोध करते, भले विश्व क्यों न विरोध में होता। अन्यथा उन्होंने लोगों को परिस्थिति का ज्ञान कराया होता और उनके विचार से वे मान्यता देते, किन्तु देश–विभाजन के पश्चात् ही हमारी पूजामूर्ति अखण्ड भारतमाता भग्न हुई तो भी आज के राष्ट्रीय नेतागणों को इस प्रकार के अत्याचारी के विरोध करने की कल्पना मेरे मस्तिष्क में नहीं घुसी थी। विभाजन के पश्चात् और २० जनवरी, १६४८ के पहले दो बार मैं दिल्ली और पंजाब में हो आया और मैंने प्रत्यक्ष क्या देखा, मेरे विचार में वह हृदय–द्रावक, कारुणिक, अमानवीय, अघटित और बीभत्स १७ जनवरी, १६४७ था। मन में कुछ कल्पनाएँ थीं, किन्तु वे अधूरी थीं। और वे मेरे इस दिल्ली के वातावरण में निश्चित हुईं। मैंने देखा कि पराकोटी को पहुँची मानवी क्रूरता को रोकने के लिए दुस्साहस का मार्ग अपनाना अनिवार्य है। गांधी जी का अन्तिम उपवास मुसलमानों के समाधान के लिए था और हिन्दुओं पर प्रारम्भ से ही हुए क्रूर अत्याचारों पर दया के नाम पर भयानक आघात किया गया। पेड़ के नीचे रहना सम्भव न हुआ, सहा नहीं गया, इसलिए निर्वासित मस्जिदों और मन्दिरों की छत के नीचे रहे, किन्तु मस्जिदों का उपयोग मानवी जीवन–रक्षा के लिए गांधी जी ने न होने देने के लिए प्राणों का प्रण लगाकर विरोध किया और निर्वासितों के आश्रय की कोई भी सुविधा न करके गांधीवादी शासन सत्ता के सहस्त्रों निर्वासित पुरुष–स्त्री बालकों को कहीं गटर के अथवा कहीं रास्ते के किनारे ठण्ड के दिनों में रहने को बाध्य किया और ४४ करोड़ रुपये पाकिस्तान को दिए।

लेखक महाशय! क्षण भर के लिए सोचें। उन सहस्त्रावधि सुशील, किन्तु विस्थापित पंजाबी महिलाओं में आपकी भी धर्मपत्नी है। नहीं–नहीं! कल्पना भी क्षणार्थ से अधिक अपने मन में न जमाए रखें, किन्तु इस प्रकार के अत्याचार करने वालों को दया के नाम पर दान करने वाले मनुष्य के विषय में आप किस भावना से लिप्त होंगे? यह कथा भावनामय कल्पना नहीं है, सत्य स्थिति है। दया के नाम पर प्रचंड क्रौर्य को प्रोत्साहन, पाकिस्तान में हुए अत्याचार को और हिन्दू प्रान्तों में कुछ स्थानों पर हुई प्रतिक्रिया से मुसलमानों पर हुई क्रूरता और गांधी जी का हठ और पराकोटी की नीति ही कारण है। कैसे भी शब्द–श्लेष

शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 1 का

सीताराम येचुरी के बयान पर.....

पर दर्ज की गई है। हरिद्वार में कई संतों ने येचुरी के बयान पर आपत्ति दर्ज कराते हुए एसएसपी को तहरीर दी थी। जिसके बाद येचुरी पर विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई है। आपको बता दें कि येचुरी ने कहा था कि रामायण और महाभारत भी लड़ाई और हिंसा से भरी हुई थीं, लेकिन एक प्रचारक के तौर आप सिर्फ महाकाव्य के तौर पर उसे बताते हैं, उसके बाद भी दावा करते हैं कि हिंदू हिंसक नहीं है। इससे पहले कई संतों के साथ उत्तराखंड के हरिद्वार में एसएसपी से मिले थे। उन्होंने एसएसपी को सीताराम येचुरी के खिलाफ लिखित शिकायत दी थी। रामदेव ने कहा था कि सीताराम येचुरी ने धार्मिक और सामाजिक पाप किया है। उन्होंने कहा था कि देश के हर एक व्यक्ति को कम्युनिस्टों का बहिष्कार करना चाहिए। संतों ने सीताराम येचुरी को अपना नाम बदलने की सलाह भी दी थी। इस दौरान संतों ने कहा कि हिंदू समाज कभी भी हिंसक नहीं था, सीपीएम नेता ने जो कहा उसके लिए उन्हें माफी मांगनी थी। गौरतलब है कि येचुरी पहले भी विवादित बयान देते रहे हैं। इससे पहले सीपीएम नेता ने पीएम नरेंद्र मोदी और अमित शाह की तुलना महाभारत के पात्रों दुर्योधन और दुशासन से की थी। एक चुनावी सभा में बीजेपी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा था, महाभारत में कौरव सौ भाई थे, जिनमें से आपको दो भाइयों का नाम ही याद है। दुर्योधन और दुशासन। दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होने का दावा करने वाली बीजेपी के अंदर आपको कितने लोगों का नाम याद है? नरेंद्र मोदी–अमित शाह। जो नौबत हुई थी महाभारत में कौरवों की, वह अब यहां राजनीतिक महाभारत में हो रही है।

शेष पृष्ठ 1 का

अक्षय कुमार को राष्ट्रीय.....

डाल पाए। नागरिकता पर हुई फजीहत कम भी नहीं हुई थी कि अक्षय का एक पुराना वीडियो सोशल नहीं मीडिया पर छा गया, जिसमें वह रिटायर होने के बाद कनाडा में रहने की बात कहते दिख रहे हैं। विवाद अक्षय कुमार का पीछा छोड़ने का नाम नहीं ले रहे। पहले वे वोट न डालने को लेकर सुर्खियों में रहे फिर अपनी कनाडाई नागरिकता को लेकर खबरों के केंद्र में आ गए। अब इसी विदेशी नागरिकता के कारण दो साल पहले 'रुस्तम' फिल्म के लिए उन्हें मिला राष्ट्रीय पुरस्कार भी विवादों के घेरे में आ गया है। जानकारों का मानना है कि अगर अक्षय कुमार के पास कनाडा का पासपोर्ट है तो विदेशी नागरिक होने के कारण उनको राष्ट्रीय पुरस्कार नहीं दिया जा सकता। अक्षय की टीम ने इस मुद्दे पर चुप्पी साधी हुई है। अवॉर्ड के आयोजनकर्ता डायरेक्टोरेट ऑफ फिल्म फेस्टिवल के एक अधिकारी ने बताया। नेशनल अवॉर्ड की योग्यता के लिए डायरेक्टर के मामले तो भारतीय नागरिकता अनिवार्य है। एक्टर्स के मामले में कैसा है, इस पर हम प्रावधानों को खंगालने के बाद बयान जारी करने की स्थिति में होंगे।

शेष पृष्ठ 9 का

परिशिष्ट नथूराम का.....

निकालें और पर– दोष मढ़ने के लिए बीच–बीच में ब्रिटिशों का नाम लें तो भी उपर्युक्त सत्य को नहीं छिपाया जा सकता। गांधीवाद और गांधी जी का महानता के नाम पर अपने राष्ट्र पर विचारशक्ति और सद्सद्–विवेकता के पूर्णतया विपरीत बातें लादी जाती थीं। हैदराबाद की समस्या सुलझनी थी और राष्ट्र–भाषा जैसा महत्त्वपूर्ण प्रश्न गांधी जी के हठ के कारण उर्दू का वन्य और प्रतिगामी झंझट गले से सुलझने की सीमा पर खड़ा था। विडम्बना और भयानक क्रूरता रोकने के लिए मैं सापेक्षतः एक छोटा क्रूर कृत्य करने को प्रवत्त हुआ। हिरोशिमा पर अणु–बम फेंक एक क्षण में डेढ़ लाख लोगों को मारने वाले राष्ट्र की प्रशंसा करने में आज अपना अहिंसक राष्ट्र व्यस्त है और ऐसा कहा जाता है कि डेढ़ लाख लोग मरे, किन्तु उससे और लक्ष–लक्ष लोग बचे। तो फिर मैं भी वही कहता हूँ कि गांधी जी मारे गए, हम कुछ लोग फाँसी पर चढ़ रहे हैं, बहुतेरे निर्वासित बने, जिनमें आप एक हैं, किन्तु दया और सत्य के नाम से होने वाला भयानक मानवी नरसंहार तत्काल नियन्त्रण में आया है। गांधी जी की राष्ट्र–सेवा के लिए, उन्हें शतशः प्रणाम, किन्तु राष्ट्र–सेवा को भी राष्ट्र–विच्छेदन का और राष्ट्र–शत्रु को सहायता देने का अधिकार नहीं पहुँचता है। जिस जनता का यह राष्ट्र है, उसको समझाकर और विचार–विमर्श से ये प्रश्न सुलझाने होते हैं। कुछ नेताओं ने अंधेरे में कुछ निर्णय लेकर अथवा महात्मा ने उपवास का भय दिखाकर जैसे विचित्र बाधक नीति लोगों पर लादी तो उसका परिणाम जैसे विस्फोट के बिना और क्या होगा? यह पहलु भी दृष्टि से ओझल न हो।

मेरी विनती है कि देश के लक्षावधि अभागे निर्वासित नर–नारियों की हृदय विदारक कथा आप लिखें और विश्व को स्पष्ट कर दें कि इस अमानवीय कृत्य का कारण गांधीवाद है। गांधी जी की चाहे जितना वन्दना करें, किन्तु अपना राष्ट्र फिर कभी गांधीवाद के भंवर में न फंसने दें। आज गांधीवाद मृत हो रहा है। मेरे मृत्युदण्ड की शिक्षा गांधीवादी अहिंसा का न्याय और राज्य–शासन के क्षेत्र में व्यर्थ सिद्ध कर रहा है। दया की भीख से मुझे जीवन–दान दिया जाता तो वह मेरी मौत ठहरती, किन्तु मेरा यह स्वर्गारोहण गांधीवाद की मृत्यु है। मैंने अपने इस कृत्य से कोई पाप किया है, ऐसा मुझे तनिक भी नहीं लगा। और इसलिए इस कृत्य के लिए पाप–प्रक्षालन की प्रार्थना करने की कल्पना तक मेरे मन को नही छुई, यद्यपि आपने पंचमहापातकों की माला मेरे लिए निर्माण की हो तो मुझे आपकी भावनाओं को आघात पहुँचाने की इच्छा नहीं है, किन्तु मैं आपके विचारों को खाद्य देना चाहता हूँ। पढ़िए, सोचिए और यदि स्वीकार्य न हो, तो उसे फेंक देने के लिए आप स्वच्छंद हैं, किन्तु उसके बाद भी इतना कहना मैं अवश्य चाहता हूँ कि जिसका अन्तःकरण आपके अन्तःकरण की अपेक्षा तनिक भी कम सहृदय नहीं है और जो पाप जितना ही सुसंस्कृत है, उसने गांधी–वध किया है, इस बात का विश्लेषण आपको करना पड़ेगा। गांधी जी अमर हैं, किन्तु गांधीवाद मृत्युशय्या पर पड़ा है। थोथापन और भ्रामक तुष्टिकरण के तंत्र के बलि होने के दिन समाप्त होने आए हैं, बुद्धिवाद के प्रभात काल का उदय हुआ है।

आपका
नथूराम वि० गोडसे
१४ नवम्बर, १९४६

प्रिय माडखोलकर जी! मेरा अन्तिम प्रणाम स्वीकारना अथवा तिरस्कारना आपका प्रश्न है। मेरी विनती है, उसे स्वीकार करें। आपके इस कहानी प्रकाशन को सहायता देने वालों को मेरा धन्यवाद कहें। गुरुवर्य अण्णा साहब कर्वे को मेरा अन्तिम विनय प्रणाम अवश्य कहें। और क्या लिखूँ? क्रूर कृत्य करने की प्रेरणा परिस्थिति ने मुझे दी, इसी का केवल खेद होता है। स्वर्गारोहण के प्रसंग में मैं शान्त हूँ।

आपका शुभेच्छु
नथूराम वि० गोडसे
अम्बाला बंदीगृह
१४ नवम्बर, १९४६

शेष पृष्ठ 6 का

चुनाव एक चुनौती.....

राजनीति को अपने स्वार्थो के लिए प्रभावित करते है। यह आम धारणा है कि राजनीति में सेवा कम परंतु मेवा का स्वाद अधिक मिलता है। साथ ही यह भी दुःखद है कि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले नेता भी राजनीति को ढाल बना कर अपना बचाव करने में सफल होते रहे हैं। अधिक विस्तार में न जाते हुए इन विपरीत परिस्थितियों में आज यह परम् आवश्यक है कि राष्ट्र निर्माण के लिए राजनीति को पावन व पवित्र करा जाय। क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था ने राजनीति को केवल बाहुबलियों व धनबलियों का खेल बना दिया है। जिससे चरित्रवान, समर्पित, योग्य व सेवा भाव वाले देशभक्तों का अभाव बना हुआ है। समर्थ व मेधावी युवा पीढी वर्तमान राजनीति में चालबाजों के षडयंत्रों को समझे बिना ही डर्टी पॉलिटिक्स के भ्रम में इससे दूर होती जा रही है। वह इसको निकृष्ट कार्य मानने की भूल कर रही है। उच्च अध्ययन प्राप्त युवा डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक व सिविल सर्विस आदि के प्रति अधिक उत्साहित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप कम बुद्धिमान परंतु चालबाज चमचे व चाटुकार प्रवृति वाले, विरासत में मिलने वाली नेतागिरी, जातियों के बल व धर्म के आधार पर अयोग्य लोग राजनीति में स्वार्थ पूर्ति हेतु सक्रिय हो गये हैं। छोटे–बड़े आपराधिक तत्वों को भी राजनैतिक शरण में जाना ही पड़ता है। जिससे राजनीतिज्ञ कर्मज्ञों का अभाव देश की प्रमुख समस्या बन चुकी है। राजनीति स्वार्थियों व अपराधियों के लिए नही बल्कि समाज का मार्गदर्शन करके व्यवस्थाओं को सुचारू बनाना, नागरिक हितों को ध्यान में रखना, सामाजिक व राष्ट्रीय सुरक्षा आदि के लिए समर्पित होनी चाहिये। भारतीय परिवेश में चुनाव की चुनौती को स्वीकार करने के लिए योगीराज श्रीकृष्ण व आचार्य चाणक्य जैसे महापुरुषों के राजनैतिक सिद्धान्तों को अपनाना होगा। अतः समस्त मतदाताओं को इस लोकतांत्रिक पर्व की महत्ता को समझ कर चुनावों में अपने मताधिकार का सदुपयोग करके राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनना चाहिये।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 4 का

वरदान है लहसुन.....

लाभ मिलता है। इसको पीसकर बिच्छू के डंक के स्थान पर बाँध देने से विष उतर जाता है, इसकी २–३ कलियाँ नियमित खाने से दमा, सर्दी, जुकाम और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है। यौन शक्ति को बरकरार रखने के लिए दो चम्मच आँवले के रस में लहसुन की दो कलियों को पीसकर खाने से यौन शक्ति का अपेक्षित संचार होता है। हृदय रोग से ग्रसित व्यक्ति को पानी में लहसुन का रस मिलाकर पीने से काफी फायदा होता है। त्वचा एवं चर्म रोगों से छुटकारा पाने के लिए लहसुन के रस का लेप करना चाहिए। इसके रस में पानी मिलाकर गरारे करने से गला खुल जाता है। किसी भी विषैले कीड़े के काट लेने पर लहसुन और हल्दी को साथ–साथ पीसकर कटे स्थान पर लेप करने से विष का असर धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है। मोच में लहसुन को हल्दी के साथ बराबर मात्रा में पीसकर और तेल में मिलाकर आक्रांत स्थान पर गरम–गरम बाँधने से लाभ होता है। इसकी कली को चबाने से जी मिचलाना ठीक हो जाता है।

शेष पृष्ठ 7 का

देश द्रोहियों के.....

चैलेंज बन गया है। जनसंख्या के बढ़ने से धरती कम पड़ती लगती है। महंगाई बढ़ने से लोगों में भुखमरी बढ़ती जा रही है। पीने का पानी कम होता जा रहा है। बेकारी बढ़ रही है। प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रकृति की सुन्दरता बढ़ाने वाले जीव–जन्तु, वनस्पति, झीलें, हिमाच्छादित पर्वतों, ग्लेशियरों का अभाव होता जा रहा है। परमात्मा ने जिस तरह यह सृष्टि दी थी, वह सुन्दर, मनमोहक, स्वर्गतुल्य थी। जिसे हम संभाल नहीं सके। ग्लोबल वार्मिंग ने मौसम को प्रभावित किया है।

जब आज की इस दुनिया में स्थिति इस कदर बिगड़ गई है कि कमजोर को तगड़ी मार पड़ रही है, छोटे बड़ों पर हावी हो रहे हैं। पति–पत्नी में कुत्ते–बिल्ली का बैर है। औलाद बिगड़ैल है, शासक अक्ल का अंधा है। प्रजा बात–बात पर बगावत पर उतारू हो जाती है। लोग बेईमान, कपटी, कामचोर, भ्रष्ट, कामुक हैं। हिंसा का दौर चल रहा है। आपस में प्रेम प्यार तो है नहीं। बलात्कार/गैंगरेप की घटनाएँ हो रही हैं। हाँ बैर, ईर्ष्या, तकरार बढ़े हैं। हर शख्स तनावग्रस्त है, ऐसे में मैं परमात्मा से पूछता हूँ हे भगवान! यह क्या हो रहा है? कब तक चलता रहेगा? आपके द्वारा अवतार लेकर दुनिया में सुधार लाने के लिए आपका कब तक इंतजार करना पड़ेगा? कहते हैं कि आप काले घोड़े पर सवार होकर कलिका अवतार लोगे? तो ईश्वर जल्दी इस दुनिया में अपने प्रकाशपुंज स्वरूप में अवतार लें।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 7 का

स्वाधीनता संग्राम और.....

स्थापना की थी, जो कि बाद में क्रान्तिकारियों का तीर्थस्थल बन गया था। इन्हीं की प्रेरणा से विनायक दामोदर सावरकर विदेश गए और इनसे ही देशभक्ति की दिशा में निर्देशन प्राप्त किया। सावरकर अपने को स्वामी दयानन्द का पक्का चेला कहते थे। अण्डमान के कारावास काल में वे कैदियों को सत्यार्थप्रकाश पढ़ाया करते थे। इन्हीं सावरकर के शिष्य मदनलाल ढींगरा थे जिन्होंने लंदन में कर्जन वायली को नरक भेजकर भारत माता के अपमान का करारा बदला लिया था। ये स्वयं भी आर्यसमाजी परिवार से ही थे। इसी प्रकार ३१ वर्ष तक विदेशों की खाक छानने वाले आजादी के परवाने राजा महेन्द्र प्रताप जी भी आर्यसमाजी वातावरण की ही देन थे।

इन्हीं के साथ भारत को स्वतन्त्र करने की धुन में अपने को विदेशों से लापता कर देने वाले हरिश्चन्द्र जी, स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र, आर्यसमाजी वातावरण से ही स्वाधीनता की घुट्टी पिए हुए थे। दिल्ली षड्यन्त्र में भाग लेने वाले भाई बालमुकुन्द, बलराज (म. हंसराज के पुत्र) दोनों ही आर्यसमाजी थे।

प्रथम विश्वविद्यालय के समय विदेशी सरकार का तख्ता उलटने के लिए गदरपार्टी ने एक योजना बनाई थी, दुर्भाग्यवश भेद खुल जाने से वह सफल नहीं हुई तब बगावत के अपराध में अनेकों को फाँसी, कारावास आदि दण्ड दिए गए थे जिनमें पंजाब के सोहनलाल पाठक, राजस्थान के प्रतापसिंह बारहट, जगतराम हरयाणवी आदि दृढ़ आर्यसमाजी ही थे। इनमें प्रताप सिंह बारहट के पिता केशरसिंह बारहट तो ऋषि दयानन्द से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बने थे। इन्होंने राजस्थान में जीवन भर क्रान्ति का प्रबल नाद बजाया। इसी वीर ने कोटा के एक दुश्चरित्र महन्त के यहाँ स्वामी श्रद्धानन्द के दामाद डॉ. गुरुदत्त तथा अन्य क्रान्तिकारियों के साथ डाका डालकर मिलने वाला ध न देश की स्वाधीनता के कार्य में लगाने की योजना बनाई थी जिसमें इसको कालेपानी की सजा हुई थी। इसी प्रकार मैनपुरी षड्यन्त्र के मुखिया श्री पं. गेंदालाल जी दीक्षित तो प्रत्यक्ष रूप में आर्यसमाजी थे। आप आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओं में अध्ययन कार्य करते रहे हैं। देवतास्वरूप भाई परमानन्द तो उन आर्यसमाजी उपदेशकों में से थे जो कि महर्षि के सन्देश के प्रचारार्थ विदेशों में भी गए थे और देशभक्ति के अपराध में जिन्हें फाँसी के बदले कालेपानी की यातनाएँ सहनी पड़ीं। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ऋषि दयानन्द के उन अमर शिष्यों में से थे जिनके शब्दों में आर्यसमाज उनकी माता और ऋषि दयानन्द उनके पिता थे। इनकी देशभक्ति किसी से छिपी नहीं है।

काकोरी केस के अमर हुतात्मा–इसी प्रसंग में हमें काकोरी केस के अमर हुतात्मा बिस्मिल, रोशनसिंह तथा विष्णुशरण दुब्लिश के रूप में महर्षि के अमर शिष्य आजादी के मोर्चे पर खड़े नजर आते हैं। बिस्मिल तो सत्यार्थप्रकाश से ही जीवन प्राप्त करने वालों में से थे। इनको सशस्त्र क्रान्ति तथा देशभक्ति की दीक्षा देने वाले स्वामी सोमदेव जी आर्यसमाज के उपदेशक थे जिन्होंने शाहजहांपुर आर्यसमाज मन्दिर में इनको दीक्षा दी थी। बिस्मिल नित्य हवने करने वालों में थे। ठा. रोशन सिंह अपने को आर्यसमाजी मानते थे। विष्णुराज दुब्लिश आर्यसमाज के सदस्य रहे। फाँसी के बाद राजेन्द्र लाहिड़ी की लाश का तो आर्यसमाजियों ने जुलूस निकाला था तथा सम्मानपूर्वक उनकी अन्त्येष्टि भी की थी। भगतसिंह का दल–वीर भगतसिंह के दल में तो आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त करने वालों की संख्या और अधिक प्रकट होती है। भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह कट्टर आर्यसमाजी थे। नित्य हवन करते थे। आर्यसमाज के उपदेशक भी थे।

भगतसिंह के पिता किसनसिंह भी आर्यसमाज के सदस्य रहे। इनके यहाँ सारे संस्कार आर्यसमाजी विधि से ही होते थे। अब भी होते हैं। ये आर्यसमाजी संस्थाओं में पढ़ते रहे हैं। इनके साथ यशपालजी भी बचपन में गुरुकुल में पढ़ते रहे हैं। इनकी माताजी आर्यसमाजी थीं। सुखदेव भी बचपन में आर्यकुमार सभाओं में जाते थे। इनके चाचा अचिन्त्यराम जी आर्यसमाज के सदस्य थे। कमीशन के सामने गवाही देते हुए उन्होंने कहा था कि मैं तो आर्यसमाजी विधि से सुखदेव की लाश की अन्त्येष्टि करूँगा।

शेष पृष्ठ 8 का

भारतीय वैदिक साहित्य.....

लिखा है–'प्रखर बुद्धि वैभव ने ऐसे सुंदर घूमने वाले विमान का निर्माण किया, जो कभी गलती नहीं करता'। एक और उदारहण के तौर पर यदि हम 'वाजसनेयी संहिता' (१७/५६) को देखें तो उसमें स्पष्ट रूप से लिखा है–'आकाश के मध्य में यह विमान के समान विद्यमान है द्युलोक, पृथ्वी एवं अंतरिक्ष तीनों लोकों में इसकी अबाध गति है। संपूर्ण विश्व में गमन करने वाला और मेघों के ऊपर भी चलने वाला विमानाधिपति इहलोक तथा परलोक के मध्य में सब ओर से प्रकाश देखता है'। अतः यदि हम देखें तो हमें प्रतीत होता है कि वैदिक साहित्य जीवन के विभिन्न अंगों को छूते हुए शुद्ध वैज्ञानिकता पर विशेष बल देता है तथा आध ुनिक विकासवाद के यंत्र–विज्ञान के बजाय वैदिक साहित्य के कई आयामों पर चर्चाएँ भी करता है। आधुनिक विकासवाद एवं विज्ञान वैदिक साहित्य से बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि आज इस विषय में भारतीय, यूरोपीय और अमेरिकी देशों के वैज्ञानिक सतत प्रयास कर रहे हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

राम मन्दिर बनाने का समर्थन

दैनिक इत्तेमाद के अनुसार राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सैयद गैयूरुल हसन रिजवी ने अयोध्या में राम मंदिर बनाने का समर्थन किया है और कहा है कि इससे देश में मुसलमान इज्जत और अमन चैन के साथ रह सकेंगे। उन्होंने कहा कि इस विवाद को जल्द से जल्द सुलझा लेना चाहिए ताकि दोनों सम्प्रदायों के बीच सद्भावना बनी रहे। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक आयोग को कुछ संगठनों द्वारा एक ज्ञापन प्राप्त हुआ है जिसमें कहा गया है कि देश में मुसलमान भय के वातावरण में जी रहे हैं। इस ज्ञापन में वातावरण में सुधार करने की माँग की गई है। उन्होंने कहा कि कुछ संगठनों ने यह भी माँग की है कि बाबरी मस्जिद की जगह राम मन्दिर के निर्माण में मुस्लिम संगठनों के सहयोग से विवाद खत्म हो सकेगा। रिजवी ने कहा कि अल्पसंख्यक आयोग समझता है कि अयोध्या में अब मस्जिद के पुनर्निर्माण की कोई सम्भावना नजर नहीं आती। उन्होंने कहा कि मेरा विश्वास है कि उस जगह पर मस्जिद का निर्माण नहीं किया जा सकता और न ही नमाज पढ़ी जा सकती है क्योंकि इस स्थान पर एक सौ करोड़ हिन्दुओं की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। इसलिए अगर राम मंदिर बनाने की अनुमति दे दी जाए तो इससे देश में अमन–चैन स्थापित हो पायेगा।

आईएसआईएस में शामिल हुआ एहतेशाम बिलाल

रोजनामा राष्ट्रीय सहारा के अनुसार उत्तर प्रदेश के शारदा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला एक कश्मीरी छात्र एहतेशाम बिलाल एक जिहादी संगठन में शामिल हो गया है। सोशल मीडिया के अनुसार एहतेशाम बिलाल ने इस्लामिक स्टेट ऑफ जम्मू–कश्मीर नामक उग्रवादी संगठन में शामिल हुआ है। वायरल हुई तस्वीर में उसे इस्लामिक स्टेट के झण्डे के पास खड़े हुए दिखाया गया है जिसमें वह इस्लामिक स्टेट के जम्मू–कश्मीर यूनिट की स्थापना करते हुए दिखाई दे रहा है। एहतेशाम बिलाल श्रीनगर के खानयार मोहल्ले का रहने वाला है। बिलाल के परिजनों ने सरकार से अनुरोध किया है कि वह बिलाल का पता लगाए। उन्होंने कहा कि बिलाल हमारा इकलौता बच्चा है।

कश्मीर में फैला जिहादी इस्लामीक संगठनों का मकड़जाल

दैनिक हमारा समाज के अनुसार कुछ मुस्लिम संगठनों की ओर से आर्य समाज के प्रमुख नेता स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे को महिमामंडित करने का अभियान शुरू कर दिया गया है। इस हत्यारे को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए बहादुरशाह जफर मार्ग स्थित मदरसा रशीदियार–मस्जिद भूरी भटियारी में एक आयोजन किया गया है। इस समारोह की अध्यक्षता तंजीम–इमाम–ए मस्जिद मौलाना अमीर इल्यासी ने की। इस अवसर पर उन्होंने गाजी अब्दुल रशीद नामक हत्यारे को शहीद करार दिया और कहा अब्दुल रशीद ने पैगम्बर मोहम्मद की आलोचना करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या सही की थी। उन्होंने कहा कि गाजी अब्दुल रशीद को अल्लाह ने मोहम्मद और दीन इस्लाम की जानकारी दी थी जिसके कारण उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की। अन्य वक्ताओं में मौलाना यहया कासमी, चौधरी शरीफ जैसे अनेक मुस्लिम नेता शामिल थे। इस समारोह के बाद मुस्लिम नेता अब्दुल रशीद की कब्र पर गए और वहाँ पर फातिया ख्वानी की और फूल चढ़ाए।

कबिरा खड़ा बजार में

आतंकी अजहर पर भारत की बड़ी कूटनीतिक विजय

पाक में छिपा बैठा आतंकियों का सरगना मौलामा मसूद अजहर वैश्विक आतंकी घोषित हो ही गया। भारत की इस कोशिश में अब तक चीन सबसे बड़ा अड़ंगा था, उसे भी झुकना पड़ा। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन को इंडोनेशिया के दूत से संयुक्त राष्ट्र का एक संदेश मिला। उन्हें बताया गया कि मसूद अजहर की सूची के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में किसी भी देश को कोई आपत्ति नहीं है। पाक के इशारे पर अजहर की लिस्टिंग पर आपत्ति नहीं जताकर, चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव १२६७ प्रतिबंध समिति में वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने के लिए १० साल की लगातार रोक के बाद आखिरकार अपने रुख को बदल दिया। भारत के लिए यह एक बड़ी कूटनीतिक सफलता थी क्योंकि व्यस्त वार्ता के बाद बीजिंग ने १३ मार्च को मसूद को वैश्विक आतंकी घोषित करने के प्रयास पर टेक्निकल होल्ड लगा दिया था। अमेरिका से भारी–भरकम दबाव के साथ ही फ्रांस और यूके की तरफ से मिल रही सहायता से धीरे–धीरे नई दिल्ली के पक्ष में हवा बनी। पहली सफलता २१ फरवरी को यूएनएससी का दिया गया बयान था। इसमें पुलवामा आतंकवादी हमले की निंदा की गई थी। यह एक ऐतिहासिक पहल थी क्योंकि कभी भी यूएनएससी ने कश्मीर में आतंकी हमलों पर निंदा का बयान जारी नहीं किया था और वह भी सुरक्षाकर्मियों को लेकर। अकबरुद्दीन ने कहा कि यह सब इतना आसान नहीं था। कूटनीति में देश अपने पक्ष और विपक्षों पर विचार करते हैं। इस बार मसूद को लेकर एक व्यापक वैश्विक गठबंधन बन गया था और भारत इसमें अकेला नहीं था। कई अन्य देशों जिसमें अफ्रीका से लेकर यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और कनाडा तक मार्च में मसूद को वैश्विक आतंकी घोषित करने के शुरुआती कदम का समर्थन किया था। जब चीन ने लगातार चौथी बार मसूद को वैश्विक आतंकी घोषित होने से बचाने के लिए इस बार छह महीने के लिए टेक्निकल होल्ड लगाया। तब अमेरिका ने मसूद के खिलाफ नए प्रस्ताव को लाने का फैसला किया क्योंकि वह छह महीने के अंत तक इंतजार नहीं करना चाहता था। चीन के लिए एक आतंकी का सार्वजनिक रूप से बचाव करने का मतलब सार्वजनिक सेंसर करना होगा। इसका सीधा प्रसारण होगा। यह तय था कि चीन इस मुद्दे पर एक सार्वजनिक चर्चा से पूरी तरह से बचना चाहेगा क्योंकि उसे पीआर के रूप में इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी। लिहाजा, चीन ने इस मामले में अपने हित और नुकसान को देखते हुए इस बार मसूद अजहर पर लगाए गए टेक्निकल होल्ड को हटाने का फैसला किया। उधर, भारत ने भी इस मामले में कोई ढील नहीं दी और बीजिंग के लिए संदेश भेजे। साथ ही विदेश सचिव विजय गोखले ने वाशिंगटन, बीजिंग और मास्को की राजनयिक यात्राएं कर कूटनीति को आगे बढ़ाया। जब पाकिस्तान को लगा कि उसका मजबूत और सदाबहार दोस्त चीन पीछे हट रहा है, तो बाद में उसे भी इसकी बड़ी कीमत चुकानी होगी। लिहाजा, उसने मसूद अजहर की बलि देना ही बेहतर समझा।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 15 मई से 21 मई 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल ए... मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011...
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।